04 - नए वैश्विक संतुलन की ओर भारत का कदम

05 - अमेरिका पार्टी के गठन के बावजूद चुनाव नहीं लड़ सकेंगे एलन मस्क

06 - जिले में अब तक लगभग 12 इंच बारिश, पिछले साल से 4.5 इंच अधिक

07 - कार्यकर्ताओं और प्रदेश नेतृत्व के बीच सामंजस्य बैठाकर...

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

बुधवार, 09 जुलाई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 300, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

ट्रंप की ब्रिक्स देशों को धमकी का भारत पर कितना असर ?

मोहम्मद शाहिद

ब्राज़ील के रियो डी जनेरियो में 17वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन ख़त्म हो चुका है लेकिन इसकी चर्चा अब और अधिक हो रही है, जिसकी वजह हैं अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप। दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले 10 देशों के इस संगठन के संस्थापक सदस्यों में भारत भी शामिल है।

रियो डी जनेरियो में संपन्न हुए हालिया ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के बाद एक घोषणापत्र जारी किया गया, जिसके बाद डोनाल्ड ट्रंप की प्रतिक्रिया सामने आई। उन्होंने उन देशों को सीधी धमकी दी है जो 'ब्रिक्स की अमेरिका विरोधी नीतियों के साथ' चलेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति ने ये धमकी ऐसे समय पर दी है जब कहा जा रहा है कि भारत और अमेरिका के बीच एक 'मिनी ट्रेड डील' की घोषणा कुछ ही दिनों में हो सकती है। अब सवाल ये उठ रहे हैं कि ट्रंप की ब्रिक्स संगठन को दी गई धमकी के क्या मायने हैं? और संस्थापक सदस्य होने के नाते भारत के आगे क्या चुनौतियां हैं, क्योंकि उसकी अमेरिका के साथ ट्रेड डील भी जल्द घोषित होने वाली है?

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने ट्रुथ सोशल अकाउंट पर सोमवार को पोस्ट किया कि 'जो भी देश खुद को ब्रिक्स की अमेरिका विरोधी नीतियों के साथ जोड़ता है, उस पर अतिरिक्त 10 फ़ीसदी टैरिफ़ लगाया जाएगा। इस नीति में कोई छूट नहीं दी जाएगी। इस मामले पर ध्यान देने के लिए आपका धन्यवाद।' ऐसा माना जा रहा है कि ब्रिक्स के रियो घोषणापत्र के बाद ट्रंप ने ये पोस्ट किया है। 17वां शिखर सम्मेलन 6 से 7 जुलाई को रियो डी जनेरियो में संपन्न हुआ है। इस बार के शिखर सम्मेलन का विषय- 'वैश्विक दक्षिण सहयोग को अधिक समावेशी और टिकाऊ शासन के लिए मज़बूत करना' था।

रियो घोषणापत्र में 'वैश्विक शासन में सुधार करने' से लेकर 'अंतरराष्ट्रीय स्थिरता' पर बात की गई है। इसके साथ ही इसमें एकतरफ़ा टैरिफ़ और नॉन-टैरिफ़ जैसे मुद्दों पर भी चर्चा की गई है। माना जा रहा है कि घोषणापत्र में इसी मुद्दे को लेकर डोनाल्ड ट्रंप ने टैरिफ़ लगाने की धमकी दी है। हालांकि घोषणापत्र में अमेरिका का नाम नहीं लिया गया है।

रियो घोषणापत्र में कहा गया है कि ब्रिक्स राष्ट्र एकतरफ़ा टैरिफ़ और नॉन-टैरिफ़ उपायों के बढ़ते इस्तेमाल पर गहरी चिंता व्यक्त करते हैं, ये उपाय व्यापार के तरीक़े को बिगाड़ रहे हैं और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के मानदंडों का उल्लंघन करते हैं। घोषणापत्र में ये भी कहा गया है कि एकतरफ़ा बलपूर्वक उपाय लागू करना अंतरराष्ट्रीय क़ानून का उल्लंघन है और एकतरफ़ा आर्थिक प्रतिबंध जैसी कार्रवाइयों का हानिकारक असर पड़ता है।

बयान में डब्ल्यूटीओ के नियमों के अनुसार व्यापार की वकालत की और बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की बात की गई है। अब सवाल ये कि ट्रंप ने 'ब्रिक्स की अमेरिका विरोधी नीति' को लेकर धमकी क्यों दी?.

इस पर दिल्ली स्थित ट्रेड रिसर्च ग्रुप ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव (जीटीआरआई) के संस्थापक अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि 'ट्रंप को हर चीज़ में लगता है कि अमेरिका के ख़िलाफ़ साज़िश हो रही है और इसमें कोई शक भी नहीं है कि अमेरिका की अर्थव्यवस्था कमज़ोर हुई है। ट्रंप को लगता है कि सारे देश उनके उपनिवेश हैं। वह एकतरफ़ा अपनी नीतियां लागू करना चाहते हैं।'

वहीं अंतरराष्ट्रीय मामलों की जानकार मंजरी सिंह कहती हैं कि कोई भी ऐसा संगठन जिसमें अमेरिका नहीं है, जैसे कि एससीओ या ब्रिक्स, उसे ट्रंप हमेशा से अमेरिका विरोधी मानते आए हैं। 'ब्रिक्स के संस्थापक सदस्य देशों में भारत के साथ-साथ रूस और चीन भी है जो दुनिया की ताक़तवर अर्थव्यवस्थाओं में से एक हैं। रूस और चीन आपस में अपनी करेंसी में व्यापार करते रहे हैं और साल 2022 में रूस ने ब्रिक्स देशों के लिए एक नई अंतरराष्ट्रीय रिज़र्व करेंसी का प्रस्ताव दिया था। ब्रिक्स में हमेशा से एक ऐसे बैंकिंग सिस्टम की बात की जाती रही है जो डॉलर के पैरेलल हो। इस वजह से भी ट्रंप को ब्रिक्स अमेरिका विरोधी नज़र आता है। हालांकि इस बैंकिंग सिस्टम पर आज तक सहमति नहीं बन पाई है। इस संगठन के सदस्य देश उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएं हैं। वह व्यापार पर निर्भर हैं और उनके लिए बैंकिंग सिस्टम पर बात करना भी ज़रूरी है।'

अजय श्रीवास्तव भी डॉलर की जगह किसी दूसरी करेंसी को अपनाने के विचार को ही ट्रंप के विरोध का आधार मानते हैं। वह कहते हैं, 'ब्रिक्स की कोई भौगोलिक इकाई नहीं है क्योंकि इसमें सब अलग-अलग विचारधाराओं वाले देश हैं। इस संगठन की कोई राजनीतिक ताक़त नहीं है लेकिन इसमें चीन जैसा ताक़तवर देश भी शामिल है जो इसे ख़ास बनाता है। फिर भी ट्रंप इसे धमकी दे रहे हैं तो इसकी वजह रिज़र्व करेंसी का मुद्दा है। कोई भी देश अपनी करेंसी में व्यापार करने की बात कहता है तो अमेरिका इस तरह की बात करता है।'

अमेरिका ने साल 2012 में ईरान और 2022 में रूस को सोसाइटी फ़ॉर वर्ल्डवाइड इंटरबैंक फ़ाइनेंशियल टेलीकॉम्युनिकेशन (स्विफ़्ट) सिस्टम से बाहर कर दिया था। इसका मतलब यह था कि अब ये देश डॉलर का आधिकारिक ट्रांज़ेक्शन नहीं कर सकते हैं। अमेरिका अब डॉलर का इस्तेमाल हथियार के रूप में करने लगा है।

'क्या ब्रिक्स की कोई कॉमन करेंसी हो सकती है? इस सवाल पर अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि यूरोप ने यूरो करेंसी बनाई लेकिन उनकी भी बहुत सारी समस्याएं हैं। अगर ब्रिक्स में कोई कॉमन करेंसी बनती है तो उसके लिए काफ़ी सोचना पड़ेगा। ये संगठन चीन केंद्रित है तो बहुत सारे देश एक कॉमन करेंसी में शायद ही दिलचस्पी दिखाएं। मंजरी सिंह कहती हैं कि 'कॉमन करेंसी कॉमन करेंसी के कई नुक़सान भी होते हैं क्योंकि अगर वह आपके पास बहुतायत में हो जाए तो उसका इस्तेमाल सिर्फ़ उन्हीं ख़ास देशों के साथ ही इस्तेमाल कर सकते हैं जिनके साथ आपका व्यापार है।' अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि ट्रंप की धमकियों से ब्रिक्स देशों को डरना नहीं चाहिए क्योंकि अगर आज ब्रिक्स को लेकर दी गई धमकी से देश डरेंगे तो कल ट्रंप किसी और चीज़ को लेकर भी धमका सकते हैं। अमेरिका जिस तरह से डील कर रहा है, उसके साथ उसी तरह से डील करना चाहिए। दोनों देशों को समान लाभ-हानि के सिद्धांत पर बात करनी चाहिए।'

लेकिन ट्रंप के ब्रिक्स देशों पर टैरिफ़ लगाने की घोषणा के बाद क्या इसका असर भारत पर भी पड़ेगा। इस सवाल पर अजय श्रीवास्तव कहते हैं कि भारत ने फ़िलहाल 10 फ़ीसदी टैरिफ़ को स्वीकार कर लिया था लेकिन जो 26 फ़ीसदी टैरिफ़ लगाने की बात कही गई है, उस पर अभी आख़िरी फ़ैसला होना है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

ब्राजीलिया में मोदी का इंडियन क्लासिकल डांस से स्वागत

ब्रिक्स के राष्ट्रपति से ट्रेड और डिफेंस पर बात, आज नामीबिया जाएंगे

ब्राजीलिया (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्रिक्स समिट में शामिल होने के बाद मंगलवार को रियो डी जनेरियो से ब्राजील की राजधानी ब्राजीलिया पहुंचे। यहां पर उनका स्वागत शिव तांडव स्तोत्र और भारतीय शास्त्रीय नृत्य से किया गया। इसके बाद पीएम मोदी ने ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डी सिल्वा के साथ ट्रेड, डिफेंस, एनर्जी, स्पेस, टेक्नोलॉजी, खेती और हेल्थ समेत कई मुद्दों पर द्विपक्षीय चर्चा की। भारतीय पीएम 2 जुलाई से 10 जुलाई तक 5 देशों की यात्रा पर हैं। अब तक वे घाना, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, अर्जेंटीना का दौरा कर चुके हैं। फिलहाल वे ब्राजील दौरे पर हैं और यहां से नामीबिया जाएंगे। पीएम मोदी के सम्मान में रंग-बिरंगे परिधानों में सजे कलाकारों ने पारंपरिक सांबा रेगे नृत्य की शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पर इसकी सराहना भी की। पीएम मोदी ने कहा कि यह प्रस्तुति ब्राजील के समृद्ध विरासत को दर्शाती है। पीएम मोदी ने इससे पहले सोमवार को ब्रिक्स सम्मेलन में पर्यावरण, जलवायु सम्मेलन और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि लोगों और धरती का स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। मोदी ने कहा- कोरोना महामारी ने दिखा दिया कि बीमारी किसी पासपोर्ट या वीजा की मोहताज नहीं होती और इसका समाधान भी सबको मिलकर ही निकालना होता है। इसलिए, हमें अपने ग्रह को स्वस्थ रखने के लिए मिलकर कोशिश करनी होगी। ब्रिक्स देशों ने रविवार को 17वें ब्रिक्स सम्मेलन में 31 पेज और 126 पॉइंट वाला एक जॉइंट घोषणा पत्र जारी किया।

प्लेन क्रैश की 26 दिन बाद आई शुरुआती जांच रिपोर्ट

- एएआईबी ने सरकार को सौंपी, फाइनल रिपोर्ट में 3 महीने लगेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (एएआईबी) ने अहमदाबाद विमान हादसे के 26 दिन बाद प्राइमरी जांच रिपोर्ट मंगलवार को केंद्र सरकार को सौंपी। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, प्राइमरी रिपोर्ट शुरुआती जांच में मिले सबूतों और तकनीकी विश्लेषण के आधार पर तैयार की गई है। इससे पहले 28 जून को केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल ने बताया था कि विमान हादसे की जांच सभी पहलुओं से की जा रही है, जिसमें साजिश (सैबोटाज) की संभावना को भी खंगाला जा रहा है। वहीं, 3 महीने में विस्तृत जांच रिपोर्ट आ सकती है। 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रही फ्लाइट एआई 171 टेकऑफ के कुछ ही देर बाद एक मेडिकल हॉस्टल की इमारत से टकरा गई थी। इसमें 270 लोगों की मौत हो गई थी, जिनमें 241 यात्री और क्रू मेंबर शामिल थे। सिर्फ एक यात्री इस हादसे में जिंदा बचा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा था कि हादसे की वजह अभी स्पष्ट नहीं है कि यह इंजन फेलियर, फ्यूल सप्लाई की समस्या या कोई तकनीकी गड़बड़ी की वजह से हुआ। ब्लैक बॉक्स भारत में ही है, उसे विदेश नहीं भेजा जाएगा।

हुकुमचंद मिल के समान, ग्वालियर-रतलाम के मिल मजदूरों को भी दिलाया जाएगा उनका हक : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रदेश में मेट्रोपोलिटिन एरिया विकास के लिए बिल लायेगी राज्य सरकार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में राज्य सरकार सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। औद्योगिकरण को बढ़ावा देकर युवाओं के लिए स्व-रोजगार के अवसर पैदा किए जा रहे हैं। सरकार लाड़ली बहना की राशि बढ़ा रही है। टेक्सटाइल पार्क में काम करने वाली

- लाड़ली बहनों को दी जाने वाली राशि में होगी वृद्धि
- व्यंजनों का एम्बेसडर है इन्दौर का पोहा

लाड़ली बहनों को 5000 रुपए अलग से दिलाएंगे। लाड़ली बहना योजना की राशि क्रमबद्ध रूप से बढ़ाकर 3000 रुपए की जाएगी। एमपीपीएससी की तीन साल की परीक्षा एक साथ कराने का आदेश दिया गया है। युवाओं का कोई अहित नहीं होने देंगे। एक लाख शासकीय पदों पर भर्तियां हो रही हैं। प्रदेश सरकार ने नौ साल से अटकी पदोन्नति का रास्ता साफ किया है। इससे 2 लाख नए पदों के लिए भर्ती की संभावना बनेगी। आजादी के बाद लम्बे समय तक गेहूँ का मूल्य 600 रुपए था, अब सरकार किसानों से 2600 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीद रही है। नदी जोड़ो परियोजनाओं के फलस्वरूप प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़ रहा है।

राज्य सरकार ने इंदौर में हुकुमचंद मिल के मजदूरों को 300 करोड़ रुपए दिलवाये, जिससे 30 साल पुराना विवाद खत्म हुआ। रतलाम की सज्जन मिल और ग्वालियर की मिल के लिए भी इसी तरह के प्रयास जारी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इंडिया टुडे मीडिया समूह द्वारा भोपाल के एक निजी होटल में आयोजित 'एम.पी. तक बैठक' संवाद कार्यक्रम में यह बात कही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि धार्मिक नगरी उज्जैन के विकास के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। सिंहस्थ-2028 के लिए तैयारियां जारी हैं। इस आयोजन में सारे रिकॉर्ड टूटेंगे। क्षिप्रा नदी को 12 मासी जीवंत रखने के लिए कान्ह नदी परियोजना पर कार्य जारी है। गंभीर नदी को भी इसमें शामिल किया जा रहा है। क्षिप्रा के जल से श्रद्धालुओं और किसानों को लाभ मिलेगा। प्रदेश सरकार मेट्रोपोलिटन विकास को गति प्रदान करने के लिए एक साल के अंदर बिल लेकर आएगी। मध्यप्रदेश पर्यटन निगम लाभ में रहने वाला देश का एकमात्र टूरिज्म बोर्ड है। इसमें हमारे द्वारा बनाए गए कॉस्ट इफेक्टिव विज्ञापनों की अहम भूमिका रही है। राज्य सरकार ने पर्यटन को वाइल्ड लाइफ से जोड़ा है। मध्यप्रदेश टाइगर, चीता, घड़ियाल और गिद्ध की संख्या में नंबर-एक पर है। उन्होंने कहा कि इंदौर का पोहा व्यंजनों का एम्बेसडर बन सकता है। भाप पर बने पोहे में तेल कम इस्तेमाल होता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भी सभी से अपने खाने में तेल की 10 प्रतिशत खपत कम करने का आहवान किया हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अंबेडकर जी ने जातियों के विवाद खत्म करके देश को एकजुट करने का कार्य किया। हमारी सरकार ने डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के 5 स्मारक बनवाए। अब जाति जनगणना शुरू होगी, तो कई प्रकार के भ्रम दूर हो जाएंगे। जातिगत जनगणना के आंकड़ों के आधार पर आरक्षण तय करेंगे। राज्य सरकार ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए कटिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य में जनकल्याण और विकास की गतिविधियों के क्रियान्वयन में प्रदेशवासियों का हरसंभव सहयोग और समर्थन निरंतर प्राप्त हो रहा है।

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

चौका और पूजा घर है
एकदम साफ-सुथरा
शेष घर कुछ उजड़ा-सा
बहुत से घरेलू उपकरणों पर
धूल जमी हुई
जिन्हें जुटाने के लिए जीवन में
किया अथक परिश्रम।

जोड़ना नहीं है कुछ
जो है वही पर्याप्त
बल्कि कुछ ज्यादा ही।

ताप नहीं है
आग सारी बुझ चुकी
शीतल जल ने जगह ले ली उसकी
जिसमें निर्मल हँसी
तैरती है श्वेत कमलों की तरह।

शांति है यहाँ
सुदूर वीराने में स्थित
किसी प्राचीन मंदिर की शांति
चंदन और अगरबत्ती की सुगंध
सर्वत्र व्याप्त।

लगभग मौन
धीमी ज़िंदगी
मंथर गति से होते हैं सब काम
वृद्ध दंपती के घर में।

- चंद्रशेखर साकल्ले

एक देश-एक चुनाव संविधान के मूल ढांचे का उल्लंघन नहीं

- पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ ने संसदीय समिति को दी अपनी लिखित राय
- चुनाव आयोग की शक्तियों पर भी पूर्व चीफ जस्टिस ने जताई चिंता

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराना संविधान के मूल ढांचे का उल्लंघन नहीं है। हालांकि, प्रस्तावित बिल में चुनाव आयोग (ईसीआई) को दी जाने वाली शक्तियों पर चिंता उन्होंने जताई है। पूर्व सीजेआई ने कहा कि इससे ईसीआई को विधानसभाओं का कार्यकाल बढ़ाने या घटाने की शक्ति मिल सकती है। उन परिस्थितियों को परिभाषित किया जाना चाहिए जिनमें ईसीआई इस शक्ति का इस्तेमाल कर सकता है। जस्टिस चंद्रचूड़ ने एक देश-एक चुनाव पर बनी संसदीय समिति को अपनी लिखित राय सौंपी है।

कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने 17 दिसंबर, 2024 को लोकसभा में एक देश-एक चुनाव संविधान संशोधन बिल पेश किया था। जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि एक साथ चुनाव कराने से बेहतर आर्थिक स्थिति वाली नेशनल पार्टियों के प्रभाव से क्षेत्रीय और छोटी पार्टियां हाशिए पर जा सकती हैं। इसके लिए चुनाव

अभियान में फाइनेंस से जुड़े नियमों को मजबूत किया जाना चाहिए। वहीं, पूर्व सीजेआई रंजन गोगोई और पूर्व सीजेआई जेएस खेहर 11 जुलाई को समिति के साथ बिल पर चर्चा करेंगे। जस्टिस गोगोई इससे पहले मार्च में भी समिति के साथ बैठक कर चुके हैं। उस समय उन्होंने भी ईसीआई को बहुत ज्यादा अधिकार दिए जाने पर चिंता जताई थी। पूर्व सीजेआई यूयू ललित फरवरी में पेश हुए थे। उन्होंने भी चरणबद्ध तरीके से एक साथ चुनाव कराए जाने का समर्थन किया था। हालांकि, उन्होंने कहा था कि जिन विधानसभाओं का कार्यकाल ज्यादा बचा है, उनके समय को कम करने से कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। निर्वाचन आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, 2034 में अगर एक देश एक चुनाव की नीति लागू होती है तो सिर्फ ईवीएम की खरीदी के लिए ही 1.5 लाख करोड़ रुपए खर्च होंगे। यह राशि कितनी ज्यादा है,इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि 2024 के लोकसभा चुनावों में अनुमानतः एक लाख करोड़ खर्च हुए।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ बुधवार, 9 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

गिर फॉरेस्ट में एक साथ दिखा 12 शेरों का परिवार

9 शावकों के साथ थी तीन शेरनियां,बारिश थमते ही जंगल से बाहर निकला झुंड

वेरावल (एजेंसी)। एशियाटिक लॉयंस के लिए फेमस गुजरात के गिर फॉरेस्ट से एक रोचक नजारा सामने आया है। सासण से विसावदर जाने वाले जंगल के रास्ते पर 12 शेरों का झुंड टहलता नजर आया। इस झुंड में 9 शावकों के साथ तीन शेरनियां थीं। बारिश थमते ही घूमने निकल पड़ा परिवार तलाला से विसावदर तक का यह 15 किलोमीटर का रास्ता गिर के जंगल के बीच से होकर गुजरता है। बरसात के मौसम के बीच बारिश थमते ही शेरों का परिवार जंगल में घूमने निकल पड़ा। तालाला से विसावदर की ओर आने-जाने वाले स्थानीय लोग यह नजारा देख रोमांचित हो गए। एक साथ 12 शेरों को देख रोमांचित हुए पर्यटक गिर में शेर प्रजाति के संरक्षण और प्रजनन में वन विभाग और स्थानीय लोगों की भागीदारी बेहद महत्वपूर्ण साबित हुई है। शेर प्रजाति के लिए किए जा रहे सुरक्षा और प्रजनन प्रयासों के कारण उनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। नतीजतन, गिर और उसके आसपास के दस तालुकाओं में शेर परिवारों का दिखना अब आम बात हो गई है। ये नजारे गिर के जंगल के समृद्ध वन्य जीवन का प्रतीक और गुजरात के लिए गर्व की बात है। 891 शेर हो चुके हैं गिर फॉरेस्ट में हाल ही में हुई शेरों की गणना में शेरों और शेरनियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। विधानसभा में सीएम भूपेंद्र पटेल ने शेरों की गिनती के बाद नए आंकड़े जारी किए थे। साल 2020 में 674 शेर थे, जो अब बढ़कर 891 हो गए हैं। इनमें 196 शेर, 330 शेरनियां और 225 शावक शामिल हैं। इस साल 10 से 13 मई 2025 के बीच अत्याधुनिक तकनीक से शेरों की गिनती की गई, जिसके आधार पर यह आंकड़ा जारी किया गया है। गुजरात के 11 जिलों की 58 तहसीलों में शेरों की उपस्थिति दर्ज की गई है। जूनागढ़, गिर सोमनाथ, अमरेली, भावनगर, द्वारका, पोरबंदर और राजकोट जिलों में शेर पाए गए हैं।

ना आयुष्मान ना राशन कार्ड.. बस आधार से बल्ले-बल्ले

- पंजाब में मान सरकार ने लांच की नई स्वास्थ्य बीमा योजना

चंडीगढ़ (एजेंसी)। ना आयुष्मान कार्ड की जरूरत ना राशन कार्ड की शर्त। पंजाब के 65 लाख लोगों के लिए खुशखबरी है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने पंजाब में नई स्वास्थ्य बीमा योजना को लॉन्च कर दिया है। इस योजना के तहत पंजाब के प्रत्येक नागरिक को 10 लाख रुपये तक का कैशलेस इलाज मिलेगा। इस योजना के लिए किसी तरह के

आय प्रमाण पत्र या राशन कार्ड की जरूरत नहीं होगी। बस पंजाब के आधार कार्ड या वोटर आईडी कार्ड से ही कैशलेस इलाज के लिए सेहत कार्ड बन जाएगा। इस योजना के लिए कार्ड बनने की शुरुआत 2 अक्टूबर से हो जाएगी। सीएम भगवंत मान ने आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल के साथ एक कार्यक्रम में यह ऐलान किया। इस योजना में सरकारी कर्मचारियों, आंगनवाड़ी कर्मी और आशा वर्कर्स भी कवर होंगे। पंजाब में मुख्यमंत्री सेहत बीमा योजना पहले से ही लागू थी, जिसे अब नया स्वरूप दिया गया है। मुख्यमंत्री भगवंत मान ने 08 जुलाई, मंगलवार को ऐलान किया कि राज्य के सभी 65 लाख परिवारों को इस योजना का फायदा मिलेगा।

अवैध धर्मांतरण मामले में फंस गए झांगुर बाबा

- योगी सरकार का तगड़ा ऐक्शन, आलीशान कोठी पर चला बुलडोजर

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में अवैध धर्मांतरण केस में जलालुद्दीन उर्फ झांगुर बाबा पर योगी सरकार ने तगड़ा ऐक्शन लिया है। बलरामपुर में बनी झांगुर बाबा की आलीशान कोठी पर बुलडोजर चलना शुरू हो गया है। बताया रहा यह कोठी अवैध तरीके से बनाई गई थी। झांगुर बाबा यही से अपने सारे काले कारनामे करता था। मुख्य

आरोपी जलालुद्दीन उर्फ झांगुर की कोतवाली उतरौला अन्तर्गत मधपुर स्थित कोठी पर मंगलवार सुबह साढ़े 10 बजे बुलडोजर चलाने की कार्रवाई की गई। यह कोठी अभिलेखों में नीतू नवीन रोहरा उर्फ नसरीन पत्नी नवीन रोहरा के नाम दर्ज है। प्रशासन का मानना है कि भवन निर्माण में झांगुर का पैसा लगा था। भवन को सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर निर्माण कराने की बात कही जा रही है। अतिक्रमण हटाने सम्बन्धित तीन नोटिस नीतू उर्फ नसरीन को पहले ही जारी की जा चुकी है। नीतू, उनके पति व बेटी को झांगुर ने इस्लाम धर्म कुबूल करवा दिया था। वे झांगुर के साथ आकर मधपुर में रहने लगे थे।

कांवड़ यात्रा रूट पर ढकी जाएंगी शराब की दुकानें

- नई व्यवस्था, एक लेन पर सिर्फ कांवड़िए ही चलेंगे

मेरठ (एजेंसी)। 11 जुलाई से कांवड़ यात्रा शुरू होगी। यूपी, हरियाणा, दिल्ली से कांवड़िए हरिद्वार पहुंचेंगे। हरिद्वार और गोमुख से जल उठाएंगे। वहीं, 4 करोड़ कांवड़ियों की सुरक्षा और सुविधा को लेकर मेरठ के कमिश्नर ऑफिस में मंगलवार को 4 राज्यों यूपी, हरियाणा, दिल्ली और उत्तराखंड के अफसरों की बैठक हुई। इसमें यूपी डीजीपी

राजीव कृष्ण और मुख्य सचिव मनोज सिंह मौजूद रहे। यूपी डीजीपी राजीव कृष्ण ने बताया- 11 जुलाई से पूरे कांवड़ रूट की शराब की दुकानों को ढका जाएगा। दुकानें खुलेंगी, लेकिन पर्दे से ढकी रहेंगी। पूरे कांवड़ रूट की ड्रोन से निगरानी होगी। ट्रैफिक पुलिस ने नया प्लान पेश किया है, जो 10 जुलाई की रात से लागू हो जाएगा। शहर में भारी वाहनों का प्रवेश नहीं होगा। शहर में एक लेन में कांवड़िए और दूसरी लेन में छोटे वाहन चलेंगे। डीजीपी राजीव कृष्ण ने कहा- डीजे की आवाज 75 डेसिबल से ज्यादा नहीं होगी। डीजे की हाइट 12 फीट से ज्यादा नही होगी। डीजे के जो कंपटीशन होते हैं, उसके लिए डीजे संचालकों को मना किया गया है।

भारत बंद! आज सड़क पर देश के 25 करोड़ कर्मचारी

बैंक-डाकघर में काम बंद रहेगा,ठप हो सकती हैं परिवहन सेवाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। बुधवार को बड़े स्तर पर भारत बंद की तैयारी है। अनुमान है इस बंद में बैंकिंग, इंश्योरेंस, पोस्टल सेवा समेत विभिन्न क्षेत्रों के 25 करोड़ से ज्यादा कर्मचारी शामिल हो सकते हैं। यह हड़ताल 10 केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने बुलाई है और इसे भारत बंद का नाम दिया है। यह भारत बंद सरकार की मजदूर विरोधी, किसान विरोधी और राष्ट्र विरोधी कॉरपोरेट-समर्थक नीतियों के विरोध में बुलाया गया है। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की अमरजीत कौर ने कहाकि हड़ताल में 25 करोड़ से अधिक कर्मचारियों के भाग लेने की उम्मीद है। किसान और ग्रामीण कर्मचारी भी देशभर में इस विरोध प्रदर्शन का हिस्सा बनेंगे। हिंद मजदूर सभा के हरभजन सिंह सिद्धू ने कहा कि हड़ताल के कारण बैंकिंग, डाक, कोयला खनन, कारखाने, राज्य परिवहन सेवाएं प्रभावित होंगी। भारत बंद कर रहे संगठनों ने पिछले साल श्रम मंत्री मनसुख मांडविया को 17-सूत्रीय मांगों का एक चार्टर सौंपा था। इनका कहना है कि सरकार पिछले 10 वर्षों से वार्षिक श्रम सम्मेलन का आयोजन नहीं कर रही है। यह मजदूरों-कर्मचारियों के हितों के खिलाफ फैसले ले रही है। मजदूर संगठनों के मंच ने यह आरोप भी लगाया कि आर्थिक नीतियों के कारण बेरोजगारी बढ़ रही है, जरूरी वस्तुओं की कीमतें बढ़ रही हैं, मजदूरी में गिरावट आ रही है और शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बुनियादी नागरिक सुविधाओं में सामाजिक क्षेत्र के खर्च में कटौती हो रही है। ये सभी गरीबों, निम्न आय वर्ग के लोगों के साथ मध्यम वर्ग के लिए और अधिक असमानता और अभाव पैदा कर रहे हैं। मंच ने यह भी आरोप लगाया कि सरकारी विभागों में युवाओं को नियमित नियुक्तियां देने के बजाय रिटायर्ड लोगों को ही काम पर रखने की नीति देश को आगे नहीं ले जाएगी। वजह, 65 फीसदी आबादी 35 साल से कम आयु की है। वहीं, बेरोजगारों की संख्या 20 से 25 साल के आयु वर्ग के लोगों में सबसे अधिक है।

वर्ल्ड रोज कन्वेंशन 2028 वैश्विक संवाद और आतिथ्य का अभूतपूर्व अवसरः राज्यपाल

आयोजन, विश्व स्तर पर भारत की बढ़ती साख का प्रतिफल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा कि वर्ल्ड रोज कन्वेंशन 2028 का भोपाल में आयोजन, भारत के लिए ऐतिहासिक और गौरवशाली क्षण है। यह आयोजन विश्व स्तर पर भारत की बढ़ती साख का प्रतिफल है। भारत को विश्वगुरू के रूप में स्थापित करने की ओर बढ़ा कदम है।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल 21वें वर्ल्ड रोज कन्वेंशन- 2028 संबंधी बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने मध्यप्रदेश रोज सोसायटी के मुख्य संरक्षक के रूप में वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ रोज सोसायटी द्वारा भारत को 2028 के आयोजन की मेजबानी के लिए मई 2025 में सौंपे गए ध्वज को ग्रहण किया। कन्वेंशन का आयोजन भोपाल में वर्ष 2028 में 7 से 13 जनवरी तक होगा। बैठक का आयोजन राजभवन के सांदीपनि सभागार में इण्डियन रोज फेडरेशन के तत्वावधान में मध्यप्रदेश रोज सोसायटी द्वारा किया गया था। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ रोज सोसायटी के ध्वज को ग्रहण करना देश और प्रदेश के लिए अत्यंत गौरव का पल है। यह ध्वज 2028 के ऐतिहासिक आयोजन के गौरवपूर्ण कार्यक्रम की जिम्मेदारी, वैश्विक संवाद और आतिथ्य के अभूतपूर्व अवसर का प्रतीक है। राज्यपाल श्री पटेल ने वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ रोज सोसायटी द्वारा भारत को पहली बार आयोजन की जिम्मेदारी सौंपने के लिए आभार ज्ञापित किया।

भारतीय सेना को अब मिलेगी और ज्यादा ताकत

- स्थानीय स्तर पर बने एमजीएस सिस्टम से थर-थर कांपेंगे दुश्मन

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना के शौर्य प्रदर्शन के बाद अब सरकार सेना की ताकत को और भी ज्यादा बढ़ाने की तरफ देख रही है। सेना अब स्थानीय स्तर पर निर्मित माउंटेड गन सिस्टम के प्रदर्शन का आंकलन करने के लिए तैयार है, जो कि 85 सेकंड में फायर कर सकती है और इसके साथ ही तेजी से चल भी सकती है। सरकारी अधिकारियों के मुताबिक यह एक ऐसी क्षमता है, जो 30 टन के हथियार को तेजी से मूव करने और काउंटर बैटरी फायर से बचने में सक्षम बनाती है। सरकारी अधिकारियों ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि सेना ने डीआरडीओ के अहमदनगर स्थित वाहन अनुसंधान एवं विकास केंद्र को पत्र लिखकर विभिन्न इलाकों और मौसम के हिसाब से और अन्य परिस्थितियों में परीक्षणों करने के लिए माउंटेड गन सिस्टम उपलब्ध कराने को कहा है।

कांग्रेस ने शुरू की आंतरिक प्रक्रिया, सरकार भी ऐक्टिव

जस्टिस वर्मा के खिलाफ एकजुट होंगे सत्ता और विपक्ष !

नई दिल्ली (एजेंसी)। सत्तापक्ष संसद के आगामी मॉनसून सत्र में इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के खिलाफ कैश बरामदगी मामले में महाभियोग प्रस्ताव लाने की योजना बना रहा है। इसको लेकर कांग्रेस ने भी सोमवार को अपनी आंतरिक प्रक्रिया शुरू कर दी है। सूत्रों के अनुसार, पार्टी नेतृत्व ने लोकसभा में कांग्रेस के सदन नेताओं को निर्देश दिया है कि वे उन सांसदों की पहचान करें जो इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करेंगे। नियमों के अनुसार, लोकसभा में महाभियोग प्रस्ताव के लिए कम से कम 100 सांसदों के हस्ताक्षर जरूरी होते हैं, जबकि राज्यसभा में यह संख्या 50 है। प्रस्ताव को लोकसभा अध्यक्ष की जांच के बाद जजेज (इंक्वायरी) एक्ट के तहत समिति के पास भेजा जाता है। कांग्रेस सूत्रों के हवाले से लिखा कि एआईसीसी संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने इस संबंध में कांग्रेस के सदन नेताओं को पत्र भेजा है। यह पत्र ऐसे समय में भेजा गया है जब सत्तापक्ष बीजेपी और विपक्ष दोनों के सांसदों को प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के लिए आगे लाने की योजना बना रहा है।

दलाई लामा मामले पर फिर से तिलमिला सकता है चीन

- भारत रत्न के बाद सर्वदलीय संसदीय मंच की नई मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। तिब्बत पर सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने सोमवार को दलाई लामा संस्था और उनके उत्तराधिकारी को चुनने के उसके अधिकार को वैश्विक मान्यता दिए जाने का आह्वान किया। यह मंच विभिन्न दलों के सांसदों का एक समूह है। चीन का दावा है कि दलाई लामा के उत्तराधिकारी को मंजूरी देने का एकमात्र अधिकार उसके पास है। अरुणाचल पूर्व से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद तापिर गाओ ने कहा कि मंच ने अपनी पिछली बैठकों में दलाई लामा के लिए भारत रत्न की मांग की थी। दलाई लामा का 90वां जन्मदिन छह जुलाई को मनाया गया। मंच की पिछली बैठक इस वर्ष मार्च में हुई थी। मंच के सह-संयोजक गाओ ने कहा, दलाई लामा की संस्था तिब्बती बौद्धों की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में निहित है। इस मामले में चीन की कोई भूमिका नहीं है। दुनिया को इसे जानना चाहिए। मंच के सदस्यों में भाजपा, कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस सहित विभिन्न दलों के सांसद शामिल हैं।

अमेरिकी धमकी को ठेंगा, आपसी लेनदेन पर आगे बढ़ी बात

ब्रिक्स देशों ने सीमा पार भुगतान प्रणाली पर की बड़ी चर्चा

रियो डी जनेरियो (एजेंसी)। ब्रिक्स देशों के नेताओं ने क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट सिस्टम पर बात की है। रियो डी जनेरियो में हुए ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में इस बारे में घोषणा की गई। नेताओं ने अपने वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक के गवर्नरों को इस मामले पर आगे बात

- नए सिस्टम से ब्रिक्स देशों में पैसे भेजना होगा और आसान

करने के लिए कहा है। वे ब्रिक्स पेमेंट सिस्टम को और बेहतर बनाने के तरीकों पर भी विचार करेंगे। घोषणा में कहा गया है, हम अपने वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक के गवर्नरों को ब्रिक्स क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट्स इनिशिएटिव पर आगे चर्चा करने का काम सौंपते हैं। ब्रिक्स पेमेंट टास्क फोर्स ने जो प्रगति की है, उसे हम स्वीकार करते हैं। इससे ब्रिक्स पेमेंट सिस्टम को और बेहतर बनाने के लिए चर्चा जारी रखने में मदद मिलेगी। घोषणा में आगे कहा गया है, इस संबंध में, हम टेक्निकल रिपोर्ट ब्रिक्स क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट्स सिस्टम का स्वागत करते हैं। यह रिपोर्ट सदस्यों की पसंद जाहिर करती है।

यह ब्रिक्स देशों और अन्य देशों के बीच तेज, कम लागत वाली, अधिक सुलभ, कुशल, पारदर्शी और सुरक्षित क्रॉस-बॉर्डर पेमेंट को आसान बनाने के हमारे प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इससे व्यापार और निवेश को बढ़ावा मिलेगा।

दुनिया की अर्थव्यवस्था के लिए यह एक अच्छी खबर

इसका मतलब है कि ब्रिक्स देश एनडीबी को और अधिक शक्तिशाली बनाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि वह विकास परियोजनाओं को फंड कर सके। वे बैंकों के बीच सहयोग को भी बढ़ावा दे रहे हैं। यह सब ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है। ब्रिक्स देश दुनिया की अर्थव्यवस्था में एक बड़ी भूमिका निभाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि भारत का कोई व्यापारी रूस से कुछ सामान खरीदना चाहता है। अभी उसे डॉलर में पेमेंट करना होगा लेकिन नए सिस्टम के तहत, वह रुपये में पेमेंट कर सकता है। इससे उसे डॉलर में पेमेंट करने की जरूरत नहीं होगी, जिससे उसका पैसा और समय बचेगा। यह सिस्टम छोटे व्यवसायों के लिए भी फायदेमंद होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को नई दिल्ली में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन से भेंट की। सीएम ने मुलाकात के बाद कहा कि उज्जैन में आकाशवाणी केंद्र की स्थापना की जाएगी।

उज्जैन के युवक ने मोबाइल गेमिंग में जीते 1.25 करोड़

टीम में 3 और युवा, अब अंतरराष्ट्रीय लेवल में खेलेंगे, जीतने पर मिलेंगे 605 करोड़ रुपए

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के 20 साल के युवक ने मोबाइल गेमिंग में 1 करोड़ 25 लाख की इनामी राशि अपने नाम की है। युवक का नाम आर्यन चौहान है, उसने अपनी 4 सदस्यीय टीम के साथ मिलकर (बैटलग्राउंड मोबाइल इंडिया) प्रो सीरीज 2025 का फाइनल जीता है। आर्यन ने बताया कि इस प्रतियोगिता का ग्रैंड फिनाले दिल्ली के यशोभूमि सेंटर में 4 से 6 जुलाई तक हुआ था। इसमें देश की टॉप 16 गेमिंग टीमें शामिल थीं। आर्यन की टीम में उज्जैन के अलावा देवास, सूरत और रांची के खिलाड़ी थे। अब यह टीम सऊदी अरब में होने वाली अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेगी, जिसमें कुल पुरस्कार राशि लगभग 605 करोड़ रुपए है।

अब भिड़ंत होगी इंटरनेशनल ई-स्पोर्ट्स वर्ल्ड कप में: बीएमपीएस जीतने के बाद आर्यन की टीम अब 8 जुलाई से 24 अगस्त 2025 तक रियाद (सऊदी अरब) में होने वाले ई-स्पोर्ट्स वर्ल्ड कप 2025 में भारत का प्रतिनिधित्व करेगी। इस प्रतियोगिता की कुल इनामी

राशि 70.45 मिलियन डॉलर (लगभग 605 करोड़ रुपए) है।

90 दिनों में आएगी प्राइज मनी: आर्यन ने बताया, दिल्ली में चार राउंड हुए थे। मैंने टीम बनाई थी जिसमें देवास, रांची और सूरत के तीन अन्य खिलाड़ी शामिल थे। इस प्रतियोगिता में हमारी टीम टीएमजी गेमिंग ने पहला स्थान हासिल किया। दूसरे स्थान पर रही एनओएनएक्स टीम को 55 लाख रुपए, जबकि तीसरे स्थान पर रही लॉस हरमनोस टीम को 35 लाख रुपए की इनामी राशि मिली। हमें बताया गया है कि प्राइज मनी 90 दिनों के भीतर हमारे बैंक खातों में ट्रांसफर कर दी जाएगी। बचपन से मोबाइल पर गेम खेलना पसंद था। घरवाले पहले नाराज होते थे लेकिन मम्मी ने हमेशा सपोर्ट किया। आज इस मुकाम तक पहुंचकर बहुत खुशी हो रही है। अब मेरा अगला लक्ष्य सऊदी अरब में होने वाला इंटरनेशनल मुकाबला है, जहां दुनिया भर के गेमर्स हिस्सा लेंगे।

मां ने किया सपोर्ट

आर्यन की मां मीनाक्षी चौहान ने कहा, शुरुआत में जब वह मोबाइल पर गेम खेलता था तो अच्छा नहीं लगता था। लेकिन बाद में महसूस हुआ कि वह इसे गंभीरता से ले रहा है और इसमें उसका भविष्य हो सकता है। इसलिए हमने उसे कभी रोका नहीं। आज वह जो कर रहा है, उस पर हमें गर्व है।

बाजार से लिया जाएगा 4800 करोड़ का कर्ज

- मोहन सरकार 2 अलग-अलग कर्ज लेने जा रही, 18 सालों में ब्याज के साथ चुकाएंगे लोन

भोपाल (नप्र)। एमपी सरकार बाजार से 4800 करोड़ रुपए के दो कर्ज लेने जा रही है। इस वित्त वर्ष में सरकार द्वारा लिए जा रहे पांचवें और छठे कर्ज के साथ कर्ज का चालू वित्त वर्ष में लिए जाने वाले कर्ज का आंकड़ा 14300 करोड़ रुपए तक पहुंच जाएगा। सरकार ने इसके पहले सात मई और 4 जून को कर्ज लिया है। यह कर्ज रिजर्व बैंक के माध्यम से गवर्नमेंट सिक्योरिटीज बेच कर लिया जाएगा। मोहन सरकार नए वित्त वर्ष में तीसरी बार 2500 और 2300 करोड़ रुपए के कर्ज लेने जा रही है। दोनों ही कर्ज 16 साल और 18 साल की अवधि के लिए आरबीआई के माध्यम से लिए जा रहे हैं जिसका भुगतान साल भर में दो बार कूपन रेट के जरिए ब्याज के रूप में किया जाएगा। इसके पहले जून में 2000 करोड़ और 2500 करोड़ रुपए के दो कर्ज लिए गए थे। मई में ढाई-ढाई हजार करोड़ रुपए के दो कर्ज लिए गए थे। कुल कर्ज का आंकड़ा बढ़कर 436040.27 करोड़ रुपए हो जाएगा।

भोपाल में छात्रा को जबरन गाड़ी में बैठाया

- विरोध करने पर आरोपी ने दिखाई लोहे की रॉड, जबरदस्ती होटल ले जाने की कोशिश, एफआईआर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गौतम नगर इलाके में 19 साल की युवती के साथ कथित तौर पर छेड़छाड़ और जबरदस्ती करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि पीड़िता को उसके साथ पढ़ने वाले युवक ने डरा-धमका कर होटल ले जाने की कोशिश की। घटना शनिवार, 6 जुलाई की बताई जा रही है, जबकि एफआईआर रविवार शाम को दर्ज की गई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ बीएनएस की कई धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। गोविंदपुरा थाना पुलिस के मुताबिक, पीड़िता ने शिकायत में बताया कि आरोपी तनिष नामक युवक उसके साथ पढ़ाई करता था और लंबे समय से पीछा कर परेशान कर रहा था। युवती ने बताया कि वह उससे बात नहीं करना चाहती थी, इसके बावजूद वह बार-बार संपर्क करने की कोशिश करता रहा। युवती का आरोप है कि घटना वाले दिन आरोपी ने उसे बहाने से बुलाया और जबरदस्ती गाड़ी में बैठाने की कोशिश की। जब उसने इनकार किया तो आरोपी तनिष ने अपनी गाड़ी से लोहे की रॉड निकाल ली और डराया। डर के चलते युवती गाड़ी में बैठ गई। इसके बाद वह उसे होटल ले जाने की कोशिश करने लगा। युवती ने साहस दिखाते हुए उसे धक्का दिया और वहां से निकलने की कोशिश की। इसके बाद भी आरोपी उसे जबरन पकड़ने की कोशिश की। युवती ने घर पहुंचकर परिजन को पूरी घटना की जानकारी दी। इसके बाद गोविंदपुरा पुलिस ने इस मामले में में FIR दर्ज की।

एमपी तक 'बैठक' कार्यक्रम में हुए शामिल

मध्यप्रदेश देश के सबसे तेज गति से विकास करने वाले राज्यों में अग्रणी : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य अधोसंरचना के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2003 में प्रदेश में केवल 5 शासकीय मेडिकल कॉलेज थे। आज यह संख्या बढ़कर 17 हो गई है। इस वर्ष दो और मेडिकल कॉलेज शुरू हो रहे हैं और आगामी वर्ष में छह नए कॉलेजों की शुरुआत प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार निजी स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में निवेश को भी प्रोत्साहित कर रही है, जिससे चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं दोनों स्तरों पर सशक्त हो सकें। सरकार का लक्ष्य है कि हर नागरिक को गुणवत्तापूर्ण उपचार सुलभ हो और इसके लिए हर संभव संसाधन पर कार्य किया जा रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल भोपाल के एक निजी होटल में एमपी तक के विशेष कार्यक्रम बैठक में शामिल हुए। उन्होंने प्रदेश के विकास, स्वास्थ्य व्यवस्था के सशक्तीकरण, विंध्य क्षेत्र के विकास और अन्य समसामयिक विषयों पर विस्तार से संवाद किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश देश के सबसे तेज़ गति से विकास करने वाले राज्यों में शुमार है। उन्होंने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर समिट, रीजनल कॉन्क्लेव से प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों की संभावनाओं और निवेश के अवसरों को रेखांकित किया जा रहा है। इससे स्वास्थ्य, उद्योग, पर्यटन, शिक्षा, और अधोसंरचना जैसे क्षेत्रों में पूरे प्रदेश में व्यापक और समग्र विकास हो रहा है।

टेलीमेडिसिन से गांवों तक पहुँच रही विशेषज्ञ सेवा

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि ग्रामीण और दूरस्थ अंचलों में टेलीमेडिसिन के माध्यम से विशेषज्ञों की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) को फर्स्ट रेफरल यूनिट के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों को जिला अस्पताल तक बार-बार न जाना पड़े और उन्हें वहीं इलाज मिल जाए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ने प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक तीनों स्तरों की स्वास्थ्य सेवाओं को उन्नत तकनीकों और आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करने की दिशा में तेज़ी से कार्य किया है।

अंगदान-देहदान को किया जा रहा है प्रोत्साहित

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए एयर एम्बुलेंस सेवा का संचालन किया गया है। यह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की संवेदनशील पहल है। इसके अलावा उन्होंने अंगदान और देहदान की समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार की ओर से उठाए गए कदमों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने यह निर्णय लिया है कि अंगदाताओं और देहदाताओं को 'गार्ड ऑफ ऑनर' देकर श्रद्धांजलि दी जाएगी और परिजन को स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर सम्मानित भी किया जाएगा। यह एक मानवीय पहल है जो समाज में सेवा की भावना को बढ़ाएगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विंध्य क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो रहा है। विंध्य क्षेत्र में प्राकृतिक क्षमता और अपार संभावनाएं रही हैं। राजनीतिक इच्छाशक्ति से संसाधनों को सुदृढ़ करने और समुचित उपयोग से क्षेत्र का तेज गति से विकास हुआ है। विंध्य क्षेत्र में चिकित्सा, शिक्षा, पर्यटन, उद्योग और अधोसंरचना सभी क्षेत्रों में सशक्त प्रयास किए गए हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में विंध्य क्षेत्र भारत के विकसित क्षेत्रों में अग्रणी हो, इसके लिए सतत प्रयास किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने आज नई दिल्ली प्रवास के दौरान रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह से भेंट कर विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

समय सीमा में पूरा करें निर्माणाधीन और स्वीकृत मार्ग : राज्यमंत्री श्रीमती गौर

भोपाल (नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि सड़कों के निर्माण को तय समय सीमा में पूरा करें। राज्यमंत्री श्रीमती गौर मंगलवार को मंत्रालय में गोविंदपुरा क्षेत्र के सड़कों के निर्माण प्रगति की समीक्षा कर रही थी। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने अधिकारियों को निर्देश दिए की नई बन रही सड़कों के निर्माण के साथ ही बिजली पोल लगाने का कार्य भी करें, क्योंकि सड़क तो बन जाती है, लेकिन मार्ग पर अंधेरा रहने से जनता को परेशानी होती है। अधिकारियों ने बताया कि जे के रोड का निर्माण कार्य जल्दी पूरा हो जाएगा। सेंट्रल ब्रिज व रेलिंग का कार्य 31 जुलाई तक पूरा हो जाएगा। जेके रोड पर चल रहे निर्माण कार्य में कवर्ड नाली में बड़े-बड़े पत्थर पड़े होने पर राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने नाराजगी व्यक्ति की।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने आज भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा से भेंट की।

शासकीय शालाओं में होगा शैक्षिक ओलंपियाड

विद्यार्थी कर सकेंगे 30 जुलाई तक ऑनलाइन पंजीयन

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के समस्त शासकीय प्राथमिक माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 2 से 8 के विद्यार्थियों को प्रदेश, देश और विश्व के सांस्कृतिक, भौगोलिक ऐतिहासिक परिदृश्य, समसामयिक सामान्य ज्ञान तथा हिन्दी, इंग्लिश, विज्ञान और गणित विषयों से जोड़ने के लिये मंच क्विज प्रतियोगिता ओलंपियाड का आयोजन इस वर्ष दो चरणों में जन शिक्षा केन्द्र और जिलास्तर पर किया जा रहा है। इस वर्ष जन शिक्षा केन्द्र स्तरीय आयोजन सितंबर और जिला स्तरीय आयोजन नवंबर माह में होगा। ओलंपियाड में सहभागिता के लिये विद्यार्थी शिक्षकों के सहयोग से ऑनलाइन पंजीयन आरएसकेएमपी पोर्टल पर 30 जुलाई तक कर सकेंगे।

दूसरी कक्षा के बच्चे ओएमआर शीट पर प्रश्न हल करेंगे: इस वर्ष ओलंपियाड में कक्षा दूसरी से लेकर 8वीं तक प्रारंभिक कक्षाओं के विद्यार्थी ओएमआर शीट पर प्रश्न हल करेंगे। इस व्यवस्था से बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये प्रारंभिक काल से अनुभव प्राप्त होगा। कक्षा 2 और 3 के लिये इंग्लिश, हिन्दी और गणित, कक्षा 4 और 5 के लिए इंग्लिश, हिन्दी, गणित एवं पर्यावरण विषय पर और कक्षा 6, 7 और 8 के लिए हिन्दी, संस्कृत, इंग्लिश, विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान विषय में ओलंपियाड प्रतियोगिता होगी।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद पल्लव पहनकर विश्व कल्याण की प्रार्थना करेगा सिंधी समाज

उल्हास नगर से भोपाल पहुंचा जत्था, स्टेशन पर किया गया भव्य स्वागत

भोपाल। पाकिस्तान पर ऑपरेशन सिंदूर के दौरान मिली बड़ी सफलता के बाद सिंधी समाज हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे विशेष प्रार्थना करने जा रहा है। आषाढ़ माह में गंगा नदी के किनारे इष्ट देव भगवान झूलेलाल के समक्ष विश्व कल्याण की प्रार्थना लेकर उल्हासनगर से सिंधी समाज का जत्था हरिद्वार जा रहा है। सोमवार को जत्थे के भोपाल पहुंचने के बाद भोपाल स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर भाजपा प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश केसवानी ने जत्थे का स्वागत करते हुए देश और विदेश में सुख शांति की प्रार्थना करने का संदेश दिया। इस अवसर पर भोपाल से भी कुछ श्रद्धालु हरिद्वार के लिए रवाना हुए। जत्थे की अगुवाई कर रहे उल्हासनगर

के पूर्व उपमहापौर विनोद तलरेजा ने बताया कि सिंधी समाज अपनी सदियों पुरानी परंपरा के तहत बारिश शुरू होते ही गंगा नदी के किनारे प्रार्थना करने के लिए पहुंचते हैं और देश में अच्छी बारिश और शांति की प्रार्थना की जाती है।

प्रगति पथ पर बढ़ रहा मध्य प्रदेश- इस अवसर पर तलरेजा ने बताया कि मध्य प्रदेश में लगातार विकास कार्य हो रहे हैं। पिछले कुछ सालों में यहां पर विभिन्न सुविधाओं में बढ़ोत्तरी हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की योजनाओं का लाभ और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की कार्यशैली से जल्दी ही यहां पर अन्य विकास होंगे, जिसका लाभ लोगों को मिलेगा। इस अवसर पर जागृत हिंदू मंच के संयोजक अधिवक्ता सुनील जैन महामंत्री राजा भैया सेन उपाध्यक्ष अनिल मोटवानी कोषाध्यक्ष शिव इसरानी, यश कुमार, मुकेश कुमार रवि भाई सहित अनेक लोगों ने जत्थे का स्वागत किया।

अपर मुख्य सचिव संजय दुबे ने की विभागीय योजनाओं की समीक्षा

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री संजय दुबे ने सोमवार को कार्यभार ग्रहण करने के बाद भोपाल के पालिका भवन स्थित संचालनालय में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर योजनाओं की समीक्षा की। इस मौके पर निर्वतमान अपर मुख्य सचिव श्री संजय शुक्ला भी उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश ग्रोथ कॉन्क्लेव की ली जानकारी: अपर मुख्य सचिव श्री दुबे ने इंदौर के ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर 11 जुलाई को होने वाले एमपी ग्रोथ कॉन्क्लेव की तैयारियों की जानकारी ली। प्रदेश के शहरी क्षेत्र के विकास में यह कॉन्क्लेव बहुत महत्वपूर्ण है। आयुक्त नगरीय प्रशासन श्री संकेत भोंडवे ने विभाग में संचालित विभिन्न योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। अपर मुख्य सचिव श्री दुबे ने निर्देश दिए कि नगरीय विकास एवं आवास विभाग से संबंधित कार्यों की नियमित समीक्षा की जाएगी। योजनाओं में प्रगति लाने के लिये प्रत्येक सोमवार को विभागीय समीक्षा बैठक आयोजित की जाएगी। उन्होंने सभी अधिकारियों से योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं समयबद्ध कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिये। बैठक में विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

उज्जैन में महाकाल मंदिर के सामने बन रहा होटल ढहाया

उज्जैन। महाकाल मंदिर के ठीक सामने गेट नंबर चार के पास, बिना अनुमति बन रहे एक बहुमंजिला होटल को नगर निगम ने मंगलवार को ध्वस्त कर दिया। करीब दो घंटे तक चली कार्रवाई में जेसीबी मशीन से पूरा निर्माण ढहा दिया गया। यह होटल अशोक जोशी द्वारा बनवाया जा रहा था, जिन्हें पहले ही दो बार नोटिस जारी किया गया था।नगर निगम भवन अधिकारी दीपक शर्मा के अनुसार, उक्त निर्माण बिना स्वीकृत नक्शे और वैध अनुज्ञा के शुरू किया गया था। निगम ने तीन दिन पहले नोटिस जारी कर निर्माण रोकने के निर्देश दिए थे।

एक पेड़ मां के नाम! फंदा गांव में जागृत हिंदू मंच ने बोया पर्यावरण प्रेम का बीज

सीहोर। जिन्होंने जीवन दिया, उनके नाम जीवन देना हमारा धर्म है। इसी भावनात्मक सोच को साकार करते हुए ग्राम फंदा में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के अंतर्गत विशाल वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान का नेतृत्व जागृत हिंदू मंच, सीहोर के जिला अध्यक्ष विपुल बंसल ने किया, जबकि मंच के संरक्षक डॉ. दुर्गेश केसवानी भी विशेष रूप से इस पावन कार्य में शामिल हुए। आयोजन में गांव के बुजुर्गों, महिलाओं, युवाओं और बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे पूरे गांव में उत्सव जैसा माहौल बन गया। जिला अध्यक्ष विपुल बंसल ने इस अभियान को मातृभक्ति और प्रकृति प्रेम का संगम बताया। उन्होंने कहा, मां सिर्फ जन्म नहीं देती, संस्कार भी देती है। आज जब पर्यावरण संकट के दौर से गुजर रहा है, तब

मां के नाम एक पेड़ लगाना सिर्फ सम्मान नहीं, कर्तव्य भी है। यह छोटा सा कार्य हमारी अगली पीढ़ियों के लिए ऑक्सीजन का अमूल्य उपहार होगा। हमारा लक्ष्य है कि जिले के हर गांव में यह मुहिम पहुंचे और हजारों वृक्ष लगाए जाएं। जागृत हिंदू मंच के संरक्षक डॉ. दुर्गेश केसवानी ने अभियान को 'संस्कारों से भरी हरित क्रांति' करार दिया। उन्होंने कहा, आज की भागती दुनिया में अगर हम मां और प्रकृति-दोनों को याद करते हुए एक पौधा लगाएं, तो समाज में एक सकारात्मक ऊर्जा फैलती है। यह केवल पौधा नहीं, एक संस्कार है, जो हर घर को जोड़ता है। मैं चाहता हूं कि आने वाले वर्षों में यह एक जनआंदोलन बने, जिसमें हर व्यक्ति मां के चरणों में वृक्ष अर्पित करे।

समाज और सहभागिता: इस आयोजन में बच्चों को पेड़ के महत्व पर लघु भाषण देने का अवसर दिया गया। महिलाओं ने 'वृक्ष रक्षा सूत्र' बांधकर पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली। युवाओं ने पौधों को गोद लेने का संकल्प लिया और नियमित देखभाल की जिम्मेदारी उठाई।

भविष्य की योजना

जागृत हिंदू मंच आने वाले दिनों में जिले के अन्य गांवों में भी यह अभियान चलाएगा। इसके तहत वृक्षारोपण के साथ-साथ पर्यावरण जागरूकता शिविर और पर्यावरण शिक्षण कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएंगी। इस अवसर पर सर्वश्री नरेंद्र कुमार मोटवानी,विपुल बंसल,अनिल मोटवानी, धीरज केसवानी, प्रशांत कुमार, भव्य मोटवानी, सक्षम कुमार, जितेंद्र कुशवाहा, जितेंद्र कुमार मोहन अहिरवार सहित अनेक लोगों उपस्थित थे

संपादकीय

ब्रिक्स समिट का हासिल

अगर भारत के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की खुलकर निंदा और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के विस्तार की मांग को कामयाबी का पैमाना मानें तो ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित 11 देशों के संगठन ब्रिक्स का 17वां दो दिनी शिखर सम्मेलन सफल रहा। इसका एक कारण और भी है कि सम्मेलन की समाप्ति के दूसरे ही दिन अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ब्रिक्स देशों को चेतावनी के स्वर में कहा कि वो अमेरिकी मुद्रा डॉलर को कमजोर करने के बारे में सोचें भी नहीं। ब्रिक्स 2025 के समापन पर जारी साझा घोषणा पत्र में भारत और ब्राजील का खास तौर पर जिक्र किया गया। ब्रिक्स नेताओं ने पहलगाम हमले की कड़ी निंदा की साथ ही भारत और ब्राजील को संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति में स्थाई सदस्य बनाए जाने की मांग की गई है। ब्रिक्स नेताओं ने इस साझा घोषणा पत्र में संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद को अधिक लोकतांत्रिक और प्रभावशाली बनाने के लिए ग्लोबल साउथ के दो देश भारत और ब्राजील को इसका सदस्य बनाने की पुरजोर मांग की है। ब्रिक्स देशों के नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र, जिसमें सुरक्षा परिषद भी शामिल है, के व्यापक सुधार के लिए अपना समर्थन दोहराया है, ताकि इसे और अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधित्वपूर्ण, प्रभावी और कुशल बनाया जा सके। ब्रिक्स समूह ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। ब्रिक्स घोषणा पत्र में कहा गया है, ''हम 'आतंकवाद को कतई बर्दाश्त ना करने' की नीति सुनिश्चित करने और आतंकवाद का मुकाबला करने में दोहरे मापदंड को खारिज करने का आग्रह करते हैं।'' सम्मेलन में ब्रिक्स नेताओं ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की टैरिफ पॉलिटिक्स का सीधा नाम न लेते एकतरफा शुल्क और गैर-शुल्क उपायों के बढ़ने के बारे में भी गंभीर चिंता व्यक्त की। ब्रिक्स ने दुनिया के कई हिस्सों में जारी संघर्षों और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में ध्रुवीकरण और विखंडन की वर्तमान स्थिति पर भी चिंता जताई। इसमें कहा गया है, ''हम कब्जे वाले फलस्तीनी क्षेत्र की स्थिति के बारे में अपनी गंभीर चिंता दोहराते हैं।' गौरतलब है कि ब्रिक्स में कुल 11 देश है जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन, साउथ अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, इंडोनेशिया, सऊदी अरब, यूएई और ईरान शामिल हैं। साथ ही बेलारूस, बोलीविया, क्यूबा, कजाकिस्तान, मलेशिया, नाइजीरिया, थाईलैंड, युगांडा और उज्बेकिस्तान ब्रिक्स के पार्टनर देश है। इस साल वियतनाम को भी पार्टनर देश के तौर पर ब्रिक्स में शामिल किया गया है। यूं शिखर सम्मेलन था, लेकिन इसमें चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन और मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल-फतह अल-सिसी समिट में नहीं आए। एक और अहम बात प्रधामनंत्री मोदी द्वारा सदस्य देशों की सहमति से 18वें ब्रिक्स समिट 2026 की मेजबानी स्वीकार करना है। ब्रिक्स देशों के नेताओं ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसी) के 33वें समिट की मेजबानी के लिए भारत की उम्मीदवारी का भी स्वागत किया। उधर चीन में जारी राजनीतिक उठापटक की अपुष्ट खबरों के बीच चीनी राष्ट्रपति शी पिंग का न आना काफी कुछ कहता है। पीएम मोदी की भेंट मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम से हुई और पीएम मोदी ने पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा करने के लिए प्रधानमंत्री इब्राहिम का आभार जताया। दोनों नेताओं ने भारत-आसियान समिट में साझेदारी पर भी विस्तार से चर्चा की। गौरतलब है कि दुनिया में ब्रिक्स एक प्रभावशाली समूह के रूप में उभरा है क्योंकि यह विश्व की 11 प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं को एकसाथ लाता है, जो वैश्विक जनसंख्या का लगभग 49.5 प्रतिशत, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 40 प्रतिशत और वैश्विक व्यापार का लगभग 26 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।

नए वैश्विक संतुलन की ओर भारत का कदम

प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यात्रा के दौरान 'कोएलिशन फॉर डिज़ास्टर रेज़िलिएंट इन्फ्रास्ट्रक्चर (सीडीआरआई)' जैसे भारतीय वैश्विक पहलों का उल्लेख कर यह दिखाया कि भारत केवल सहायता मांगने वाला राष्ट्र नहीं है, बल्कि समाधान प्रस्तुत करने वाला, एक सक्रिय निर्माणकर्ता भी है। भारत द्वारा प्रस्तुत 'सस्ती तकनीक', 'सुलभ दवाएँ,डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना' (डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर) जैसे मॉडल अब विकासशील देशों के लिए अनुकरणीय उदाहरण बनते जा रहे हैं। यह वह क्षेत्र है जहाँ भारत और वैश्विक उत्तर के बीच एक वैकल्पिक नैरेटिव रचा जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर, ईरान-इजराइल युद्ध संबंधित विवाद अभी ठंडे भी नहीं हुए थे कि आरएसएस के सर कार्यवाहक होसबाले के सन् 1975 में संविधान में संशोधन कर समाजवाद एवं धर्मनिरपेक्ष शब्दों को जोड़ने को लेकर चर्चा करने के सुझाव से नया तूफान आ गया। कांग्रेस ने इसे लपकने में देरी नहीं की, राहुल गांधी को एक बार फिर संघ के साथ बीजेपी को कठघरे में खड़ा करने का सुनहरा मौका मिल गया। संघ सर कार्यवाहक होसबाले का यह बयान अनुचित नहीं मगर यह कहा जाए कि इसकी टाइमिंग भी अनुपयुक्त है, तो गलत नहीं होगा। संघ बीजेपी की मातृ संस्था है, यदि बीजेपी को नुकसान होता है तो संघ की विचारधारा को चोट पहुंचेगी।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
लेखक स्तंभकार हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया बहुराष्ट्रीय यात्राओं ने भारत की विदेश नीति की उस सूक्ष्मता और दूरदर्शिता को एक नई परिभाषा दी है, जो अब केवल कूटनीतिक संबद्धताओं तक सीमित न रहकर वैश्विक दक्षिण यानी ग्लोबल साउथ के साथ एक सहृदय और सशक्त भागीदारी की आकांक्षा बन गई है। घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो तथा अर्जेंटीना जैसे देशों की यात्रा, और तत्पश्चात ब्राज़ील के ब्रिक्स सम्मेलन में भागीदारी, एक सुविचारित रणनीति का द्योतक है, जो भारत को न केवल दक्षिण-दक्षिण सहयोग का केंद्र बनाना चाहती है, बल्कि एक ऐसे विकल्प के रूप में भी प्रस्तुत करती है, जो वैश्विक उत्तर की एकाधिपत्यवादी नीतियों से अलग, समावेशी और सहभागी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की ओर संकेत करता है।

घाना में प्रधानमंत्री की यात्रा का मूल उद्देश्य भारत-घाना संबंधों को 'समग्र साझेदारी' में परिवर्तित करना था। यह न केवल कूटनीतिक भाषा में एक उन्नयन था, बल्कि व्यावहारिक रूप से पश्चिम अफ्रीका को एक 'वैक्सीन हब' में विकसित करने की योजना का समर्थन था। भारत की फार्मा शक्ति, जिसकी पहचान कोविड-19 के समय 'विश्व की फार्मेसी' के रूप में हुई थी, अब अफ्रीकी महाद्वीप के लिए स्वास्थ्य-सहयोग की आकांक्षा बन गई है। भारत के 'लोकल सॉल्यूशंस फॉर ग्लोबल चैलेंजेस' का यह प्रत्यक्ष रूप है, जहाँ एक विकासशील देश, तकनीक, दवा और डिजिटलीकरण के ज़रिए एक दूसरे विकासशील देश को शक्ति दे रहा है, न कि कर्ज़ के बोझ तले दबा रहा है।

त्रिनिदाद और टोबैगो की यात्रा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी। प्रधानमंत्री मोदी का वहां भारतीय प्रवासी समुदाय को संबोधित करना केवल एक राजनीतिक औपचारिकता नहीं थी, बल्कि उस ऐतिहासिक पीड़ा को स्मरण करना भी था जब 1845 में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के तहत भारतीय श्रमिकों को गन्ने के खेतों में मजदूरी के लिए लाया गया था। भारत की इस 'गिरमिटिया स्मृति' को मान्यता देना और वहां के लोगों के साथ साझा करना, भारत की विदेश नीति में 'संवेदनशीलता' और 'सांस्कृतिक जुड़ाव' की उपस्थिति को रेखांकित करता है। इसके साथ ही 'इंडियन फार्माकोपिया' पर हस्ताक्षरित समझौता, गुणवत्ता पूर्ण और सुलभ दवाओं की पहुंच को विस्तार देने की भारत की प्रतिबद्धता का प्रमाण था।

अर्जेंटीना की यात्रा की चर्चा करें तो भारत और अर्जेंटीना ने महत्वपूर्ण खनिज संसाधनों, विशेषकर शेल गैस और तेल के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की पहल की। इस संदर्भ में यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि भारत ने अपनी फार्मा शक्ति को अर्जेंटीना में भी प्रस्तुत किया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि 'फार्मा डिप्लोमेसी' भारत की विदेश नीति की केंद्रीय धुरी बन चुकी है। साथ ही, यह दौरा इस बात का भी संकेत था कि भारत वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति में भी एक दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदार बनना चाहता है।

इन तीन देशों की यात्रा, और उसके पश्चात ब्राज़ील की ब्रिक्स सम्मेलन में भागीदारी, भारत की उस महत्वाकांक्षा का विस्तार है, जो 'उभरते हुए विश्व' के बीच समन्वय स्थापित करने की है। यह मात्र राजनीतिक कूटनीति नहीं, बल्कि एक नैतिक दायित्व की तरह है, जहाँ भारत स्वयं को विकासशील देशों का प्रवक्ता मानता है। यह नैतिक भूमिका कोई आज की नहीं, बल्कि 1955 के बांडुंग सम्मेलन और गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विरासत से उपजी है। ब्रिक्स, आईबीएसस (इंडिया ब्राजील, साउथ अफ्रीका) जैसे मंचों की स्थापना में भारत और ब्राज़ील की अग्रणी भूमिका, इसी ऐतिहासिक चेतना की परिणति है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यात्रा के दौरान 'कोएलिशन फॉर डिज़ास्टर रेज़िलिएंट इन्फ्रास्ट्रक्चर (सीडीआरआई)' जैसे भारतीय वैश्विक पहलों का उल्लेख कर यह दिखाया कि भारत केवल सहायता मांगने वाला राष्ट्र नहीं है, बल्कि समाधान प्रस्तुत करने वाला, एक सक्रिय निर्माणकर्ता भी है। भारत द्वारा प्रस्तुत 'सस्ती तकनीक', 'सुलभ दवाएँ,डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना' (डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर) जैसे मॉडल अब विकासशील देशों के लिए अनुकरणीय उदाहरण बनते जा रहे हैं। यह वह क्षेत्र है जहाँ भारत और वैश्विक उत्तर के बीच एक वैकल्पिक नैरेटिव रचा जा रहा है। यह भी स्मरणीय है कि भारत ने इन यात्राओं में किसी भी देश के साथ ऐसा कोई गठबंधन नहीं किया जो 'पश्चिम विरोधी' कहा जा सके। न ही यह प्रयास किसी 'क्लेश आधारित विश्व व्यवस्था' की ओर इशारा करता है। बल्कि भारत का उद्देश्य एक 'विकल्प आधारित वैश्विक संरचना' की ओर संकेत करना है, जो विकसित और विकासशील देशों के बीच संवाद, समझदारी और साझेदारी को नया आयाम दे सके। इस सन्दर्भ में प्रधानमंत्री का यह कथन अत्यंत सारगर्भित बन पड़ता है कि 'आज की वैश्विक राजनीति को एक ऐसे रूप में ढालना होगा जो अधिक समावेशी, न्यायोचित और प्रतिनिधित्वकारी हो।'

इन यात्राओं के माध्यम से भारत ने अपनी विदेश नीति को केवल कूटनीतिक संवाद तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसमें एक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक गहराई भी जोड़ दी है। प्रधानमंत्री ने त्रिनिदाद में भारतीय मूल के राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कांगालू और प्रधानमंत्री कमला पर्साद बिसेसर का विशेष उल्लेख कर यह दर्शाया कि भारतीय प्रवासी केवल सांस्कृतिक दूत नहीं, बल्कि उन देशों की राजनीतिक आत्मा का भी हिस्सा बन चुके हैं। 'भारतीय प्रवासी हमारी शान हैं'- यह शब्द भारत के विश्व-परिवेश में आत्मविश्वास का उद्घोष हैं।

भारत की इस वैश्विक यात्रा में एक विशेष सांकेतिक शक्ति भी निहित है। ये सभी राष्ट्र- घाना, त्रिनिदाद, अर्जेंटीना, ब्राज़ील–कभी न कभी उपनिवेशवाद की चक्की में पिस चुके हैं। इनकी सामाजिक स्मृति में 'औपनिवेशिक शोषण' एक साझा अनुभव रहा है, और शायद इसीलिए उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन जैसे मंचों का समर्थन किया। भारत, इन देशों के लिए केवल एक रणनीतिक साझेदार नहीं, बल्कि एक समान पीड़ा से गुजर चुका साथी भी है, जो आज एक सशक्त, आत्मनिर्भर, और सहयोगोन्मुख राष्ट्र बनकर खड़ा है।

इन यात्राओं का एक और महत्वपूर्ण पहलू है- 'दक्षिण-दक्षिण सहयोग' (साउथ-साउथ कोऑपरेशन) को पुनः जाग्रत करना। वर्षों तक वैश्विक विकास की नीतियाँ उत्तर-आधारित रही हैं, जहाँ 'ओईसीडी राष्ट्रों' की दृष्टि ही सार्वभौमिक मानी जाती रही। किंतु अब भारत जैसे देश यह स्पष्ट कर रहे हैं कि 'स्थानीय समाधानों' का वैश्विक महत्व है। भारत की 'डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना', 'कोविन प्लेटफॉर्म', 'यूपीआई' जैसे मॉडल उन विकासशील देशों के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं, जिनके पास संसाधनों की सीमाएँ हैं, लेकिन आकांक्षाएँ असीम हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा केवल एक व्यक्ति की राजनयिक पहल नहीं, बल्कि भारत की उस सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब है जो वैश्विक मंच पर एक सकारात्मक, रचनात्मक और मानवीय भूमिका निभाना चाहती है। यह एक ऐसा भारत है जो अब केवल 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष नहीं करता, बल्कि उसे अपने तकनीकी, औद्योगिक, और मानवीय पहलुओं के माध्यम से मूर्त रूप में प्रस्तुत भी करता है। यह भारत केवल वैश्विक शक्ति बनने की आकांक्षा नहीं रखता, वह एक ऐसा सहभागी बनना चाहता है जो विश्व को और अधिक न्यायपूर्ण, संवेदनशील और सहभागी बना सके।

इस यात्रा का सार यदि एक वाक्य में कहा जाए, तो यही होगा, भारत अब केवल वैश्विक मंच पर एक आवाज़ नहीं, बल्कि एक समाधान बनना चाहता है। और यह

समाधान विकसित और विकासशील के बीच की खाई को पाटने वाला, एक साझा लक्ष्य की ओर ले जाने वाला, और 'ग्लोबल साउथ' को आत्मविश्वास से भरने वाला है। यही है इस नई विदेश नीति की आत्मा और यही है 'साझा लक्ष्य'।

सड़क हादसों पर गंभीर चर्चा जरूरी

मुद्दा

अमित बैजनाथ गर्ग

हाल ही में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इस बात को स्वीकार किया है कि देश में हर साल पांच लाख सड़क दुर्घटनाएं होती हैं, जिसमें 1.50 लाख से अधिक लोगों की जान चली जाती है। इनमें से अधिकतर सलाहकारों की ओर से विस्तृत परियोजना रिपोर्ट यानी कि डीपीआर में की गई गलतियों के कारण है। एसोसिएशन ऑफ कंसल्टिंग सिविल इंजीनियर्स के कार्यक्रम में उन्होंने इस बात का जिक्र करते हुए कहा कि अधिकांश डीपीआर बहुत रूढ़िवादी हैं। उन्होंने ब्लाइंड स्पॉट में सुधार पर जोर देते हुए कहा कि डीपीआर तैयार करने में गुणात्मक बदलाव लाने की जरूरत है। इसके अलावा खराब इंजीनियरिंग पर ध्यान देने की जरूरत है, जिस पर अमूमन ध्यान नहीं दिया जाता या बहुत कम दिया जाता है। गडकरी की यह बात इस ओर इशारा है कि हमें सड़क हादसों पर दुर्घटना के बाद भी बात करने की जरूरत है, जो कि होती नहीं है। हमें इस पर विस्तार से चर्चा करनी होगी।

असल में जब भी कोई सड़क हादसा होता है, तो हम कितने मरे और कितने घायल की जानकारी देकर अपनी जिम्मेदारी पूरी समझ लेते हैं। एक ही सफ में तेज गति और गलत तरीके से वाहन चलाने को सड़क हादसे का जिम्मेदार बताकर बाकी सभी कामों की इतिश्री कर ली जाती है। कभी भी सड़क हादसे के त्वरित कारणों के अलावा विस्तार से चर्चा नहीं होती? उन अन्य कारणों पर भी शायद ही कभी चर्चा हुई हो, जो इन सड़क हादसों के लिए जिम्मेदार हैं। कभी इस बात पर जिक्र नहीं होता कि कंसल्टेंट की ओर से तैयार डीपीआर में गलतियां सड़क दुर्घटनाओं का मुख्य कारण है। कभी यह नहीं कहा जाता कि डीपीआर तैयार करने में कहीं अधिक सावधानी और कई गुना बदलाव लाने की सख्त जरूरत है। सड़क हादसों को रोकने के लिए हमें जिम्मेदारी तय करनी होगी और दोषियों को सजा दिलानी होगा। ऐसा किए बिना अपराधियों के मन में भय व्याप्त नहीं होगा।

सड़क सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि हर साल बड़ी संख्या में होने वाले सड़क हादसों के प्रमुख कारण खराब सड़कें और लोगों में यातायात नियमों के प्रति जागरुकता की कमी है। इसके अलावा, सही समय पर घायलों को अस्पताल नहीं पहुंचा पाना भी मौत के आंकड़े में बढ़ोतरी का बड़ा कारण है। विशेषज्ञ कहते हैं कि सरकारी प्रयासों के धरातल पर परिणाम नजर नहीं आ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरुकता के प्रयासों में तेजी लाने की दरकार है। हालांकि विशेषज्ञों की सलाह पर बहुत गंभीरता से काम किया गया हो, ऐसा कभी देखने में नहीं आया है। अगर उनकी सलाह पर काम होता, तो सड़क हादसों में निश्चित तौर पर कमी आती। लोगों की लापरवाही पर तो फिर भी चर्चा हो जाती है, लेकिन सड़कों की खराब डीपीआर और खराब इंजीनियरिंग पर तो कभी चर्चा ही नहीं होती। इस पर गंभीरता से बातचीत करना समय की दरकार है।

सड़क हादसों पर जहां एक ओर मीडिया की रिपोर्टिंग सीमित है, वहीं पुलिस की कार्यप्रणाली भी हादसे के बाद वाहन का चालान काटने और दुर्घटना होने पर उसे सीज करने तक ही काम करती है। हादसे की विस्तृत रिपोर्टिंग और जांच तक किसी का ध्यान नहीं जाता। हमारे देश में बिचौलियों को पैसे देकर ड्राइविंग लाइसेंस बन जाता है, जबकि विदेशों में लाइसेंस के लिए बहुत कठोर टेस्ट देना पड़ता है। जापान में कार खरीदने से पहले पार्किंग की जगह होने का सर्टिफिकेट देना जरूरी है, लेकिन भारत में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। यहां व्यक्ति कार खरीदता है और घर के बाहर सड़क पर ही पार्किंग बनाकर सड़क को अवरुद्ध कर देता है। देश में बिना बालिग हुए लोग वाहन चला रहे हैं, जो सड़क हादसों को न्योता देते हैं। इन बातों पर कभी चर्चा नहीं होती, जबकि बहुत गंभीरता से होनी चाहिए, क्योंकि जिंदगियों का सवाल है। सड़क हादसों की सबसे बड़ी वजह यह भी है कि ट्रैफिक नियमों का सख्ती से पालन न होना और आसानी से ड्राइविंग लाइसेंस मिलना। वहीं नशे की आदत इतनी बढ़ चुकी है कि कई बार गाड़ियों की भीड़ के कारण नहीं, बल्कि चालक की होश में ना होने की स्थिति के कारण हादसा हो जाता है। कुछ गाड़ी चलाने वालों में अधीरता इतनी होती है कि वे दूसरों से पहले निकलने की जल्दी में टक्कर मारते हुए निकल जाते हैं। कहीं-कहीं पर रफ्तार को नियंत्रित करने के लिए सड़क पर स्पीड ब्रेकर बनाए जाते हैं, लेकिन उनके बनाने का कोई मानक नहीं होता है। कई बार जहां पर आवश्यकता होती है, वहां पर नहीं बनते और अनावश्यक जगहों पर मानक हीन स्पीड ब्रेकर बना दिए जाते हैं, इसलिए ऐसे स्पीड ब्रेकर दुर्घटनाओं का कारण बन जाते हैं। इन सभी वजहों पर चर्चा होना आवश्यक है, लेकिन उम्मीदों के अनुरूप होती नहीं है।

सड़क हादसों में जान गंवाने वाले परिवारों पर क्या बीतती है, इस पर भी बहुत कम चर्चा होती है। हादसों पर लंबी और विस्तृत रिपोर्टिंग की जरूरत होती है, लेकिन हकीकत में हो नहीं पाती। कोई दुर्घटना हुई, कितने मरे और कितने घायल हुए, कितना आर्थिक नुकसान हुआ। बस! इन्हीं बातों को आधार बनाकर सामान्य रिपोर्टिंग कर ली जाती है। हादसे के दूरस्थ परिणामों पर शायद ही कभी विस्तार से बात हुई हो? कुछ साल पहले जयपुर में एक सड़क हादसे में कार पर नमक से भरा ट्रक गिर गया था। कार ट्रक के नीचे दबकर बिल्कुल पिचक कई और सभी सवार मारे गए। इनमें एक ऐसा जोड़ा भी था, जिसकी हाल ही में सगाई हुई थी। कार सवार सभी मंदिर दर्शन को जा रहे थे। हादसा हुआ, मौत हुई और सवार मारे गए। चालक फरार हो गया और पुलिस ने ट्रक जब्त कर लिया। बात आई-गई हो गई। अब कोई नहीं जानता कि उस परिवार का क्या हुआ? उस पर अपने बच्चों को खोने के बाद क्या बीती होगी? आपको मेरे बचपन की एक घटना बताता हूं। हम लोग उस समय छठी क्लास में पढ़ते थे। अनाज मंडी में हमारे घरों के सामने फड़ बने हुए थे, जिन पर शाम को हम अक्सर खेला करते थे। हमारे मोहल्ले की पूरी टोली थी, जो सुबह स्कूल में साथ पढ़ती थी और शाम को फड़ों पर साथ खेलती थी। एक शाम को हमारे साथ खेलने वाली लड़की, जिसका घर का नाम निक्की था, सड़क हादसे का शिकार हो गई। फड़ों के सामने से अक्सर अनाज की बोरियों से लदे ट्रक निकलते थे। निक्की भी ऐसे ही किसी एक ट्रक का शिकार हो गई। वह ट्रक के नीचे आई और मौके पर खत्म हो गई। उस दिन हम सभी बहुत डर गए और कई दिनों तक खेलने नहीं आए। निक्की का अंतिम संस्कार कर दिया गया। चालक फरार हो गया और पुलिस ने ट्रक जब्त कर लिया। इसके बाद उस मामले पर कभी चर्चा नहीं हुई। निक्की के परिवार पर भी कोई बात नहीं हुई। एक बचपन उजड़ गया, परिवार का एक सदस्य चला गया और हमारी दोस्त भी।

असल में मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि सड़क हादसों पर लगाम लगाने के लिए उन पर विस्तार से बात करने की जरूरत है। उनके कारणों का हमें गंभीरता से पता लगाना होगा। केवल हादसे की सामान्य रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं रहा जा सकता। हमें उसके बाद भी काम करना होगा। उसके परिवार की स्थिति पर बात करनी होगी। हादसे में जान गंवाने वाले अपने पीछे क्या छोड़ गए हैं, उन पर भी चर्चा करनी होगी। उनके बच्चों को समुचित शिक्षा और खाना मिल पा रहा है या नहीं, इस बात का भी पता लगाना होगा। हादसे में एक व्यक्ति का खत्म होना केवल उस आदमी का जाना नहीं होता, बल्कि एक परिवार का बिखर जाना होता है। हमें इन बिखरे परिवारों को संभालने के लिए और उन तक हर संभव सरकारी और निजी सहायता पहुंचाने के लिए प्रयास करना होगा। यह तभी संभव है, जब सड़क हादसा होने के बाद भी विस्तार से चर्चा की जाए और हमें ऐसा करना ही होगा।

चाक और डस्टर से परभावनाओं को समझते शिक्षक

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया
लेखिका स्तंभकार हैं।

शिक्षा मानव के जीवन का वह पहलू है, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने जीवन को आगे बढने की प्रेरणा भी दे सकता है एवं दूसरों के जीवनको रोशनी भी दे सकता है। यदि हम यह विचार करें कि शिक्षा असल में होती क्या है? क्या सुबह स्कूल जाकर दोपहर को वापिस आने को ही शिक्षा ग्रहण करना कहते है। जवाब होगा नहीं। जीवन के हर क्षण की चुनौतियों को हँसते हुए स्वीकार करना और उन चुनौतियों को सफलता से हल करने की कला शिक्षा से ही आती है।

हम हर चुनौती को जब सफलता से पार कर लेते हैं तो अपनी पीठ थपथपाना नहीं भूलते, लेकिन हमने कभी सोचा है कि हमें जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार कौन करता है? हमारे माता-पिता और उनकी ही तरह हमारे वह शिक्षक जो अपने जीवन की ऊर्जा से हमारे जीवन को रोशन करते है।

पहले के शिक्षक हमारे जीवन पर अपना एकाधिकार समझते थे। उन्हें यह अधिकार उनका हमारे प्रति प्रेम ही देता था। समय बदला पर अधिकार आज भी वैसा ही है। शिक्षा की जगह चाहे चाक और डस्टर के स्थान पर सॉफ्ट बोर्ड ने ले ली हो किन्तु एक शिक्षक के भीतर के प्रेम और समर्पण का स्थान कोई नहीं ले सका। यह एक मात्र ऐसा प्रोफेशन है जिसमें एक शिक्षक अपने छात्रों की सफलता में अपनी सफलता देखता है, किन्तु इस समर्पण भाव के लिए हर शिक्षक को कड़ी मेहनत करनी पडती है। मानवीय स्वभाव में बहकर एक शिक्षक कभी भी ऐसी मानसिकता नहीं रखता जिसमें द्वेष की बू आती हो।

शिक्षक वह इत्र है जिसकी बंद बोतल होने के बावजूद भी उसकी सुगंध को कोई रोक न पाए। आम मानवीय लालसा, द्वेष और ईर्ष्या को अपने भीतर के ज्ञान की अग्नि से जो बुझा दे, वहीं शिक्षक अपने छात्रों की सफलता पर गूँज रही तालियों में खुद को महसूस कर सकता है। एक शिक्षक भी अपने निजी जीवन में आम मानवीय भावनाओं से संघर्ष करता है लेकिन अपने निजी संघर्ष को वह अपने किसी भी छात्र के जीवन की असफलता का कारण नहीं बनने देता। वह जानता है कि उसका एक गलत कदम बहुत से छात्रों के जीवन को अँधेरे के वीरानों का राहगीर बना सकता है।

किन्तु जो बातें लिखना आसान है, उनपर चलना उतना ही कठिन है। जब हम मैं से परे हम के सफर पर चलते है, तब कहीं जाकर हम शिक्षक बनते है, लेकिन प्रश्न आज भी हमारे सामने यही आता है कि हम में से कितने असल जीवन में शिक्षक बन पाते है? सिर्फ पढ़ाना ही शिक्षा नहीं होता। अपने जीवन को एक आदर्श के रूप में छात्रों के सामने रखना भी शिक्षक का पहला धर्म है। जब हम अपनी भावनाओं को पीछे रखकर बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना करते है, तभी हमें शिक्षक कहलाने का अधिकार मिलता है। जब हमारी छात्रों की आँखों में पल रहे सपने हमारी आँखों से छलकते है, तब हम शिक्षक कहलाते है। जब एक बच्चा अपने दोस्त की शिकायत भी बिना झिझकते हुए कर दे, तब ही हमारा शिक्षक होना सार्थक होता है।

बालमन में अपनी भावनाओं से दस्तक देकर उनके जीवन को नई राह पर चलाना ही शिक्षक का असली धर्म है। अपने बनाए गए रास्तों पर छात्रों को चलाने के लिए हर शिक्षक को विश्वास की ईंटों का सहारा लेना पड़ता है। अपने धैर्य, समर्पण और मेहनत से ही हम एक ऐसे शब्दों को बुनते है जो हमारे जाने के बाद भी हमें ज़िंदा रखें। यह कठिन कार्य तो है पर इसे करने का जज्बा सिर्फ एक शिक्षक ही कर सकता है। जीवन दान के बाद विद्या ही वह दान है जो ईश्वर द्वारा दिए गए जीवन को सुंदर होने के साथ-साथ बहुमूल्य भी बना देती है। यह आसान नहीं है, पर जो एक छोटे बच्चे को एक परिपक्व इंसान में बदल दें, उस महान व्यक्तित्व की पहचान आसान हो यह हो नहीं सकता, इसलिए तो कहा गया है

गुरु गोबिंद दोउ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरु आपनो, जिस गोबिंद दियो दिखाए।

सिनेमा की रूह को छू जाने वाला एहसास, जो आज भी ज़िंदा है

गुरुदत्त सौवीं जयंती

मनीष जैसल
फ़िल्म समीक्षक

गुरुदत्त साहब को गुज़रे वक्त का एक लंबा हिस्सा हो चला है, मगर उनकी तस्वीरें, उनके फ्रेम, उनकी ख़ामोशियाँ आज भी ज़ेहन में वैसी ही जिंदा हैं जैसे किसी रूह की साँसें। 9 जुलाई 2025 को अगर वो हमारे बीच होते, तो सौ बरस के हो जाते। मगर क्या वाक़ई वो हमारे बीच नहीं हैं? क्या वो अपनी फ़िल्मों की शक्ल में आज भी हमें तन्हाई के दामन में लेकर नहीं बैठते? क्या उनकी कैमरे से कही गई नज़्में अब भी सिनेमा को नर्म नहीं बनातीं? गुरुदत्त महज़ एक निर्देशक नहीं थे, वो एक रूहानी फ़नकार थे जो कैमरे से इबादत करते थे। उनकी फ़िल्में दास्तान नहीं थीं, बल्कि अधूरी दुआओं की तर्जुमानी थीं। प्यासा, काग़ज़ के फूल, साहिब बीबी और ग़ुलाम, चौदहवीं का चाँद ये फ़िल्में किसी दौर की कलात्मक ऊँचाई नहीं थीं, बल्कि उन्होंने आने वाली नस्लों को यह सिखाया कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, आत्मा का विस्तार भी हो सकता है।

गुरुदत्त का जन्म बंगलौर में हुआ था। उनका वास्तविक नाम वसंथ कुमार शिवशंकर पादुकोण था। उन्होंने कलकत्ता (अब कोलकाता) में प्रोजेक्ट किया हुआ एक क्लासिकल वातावरण पाया, जहाँ नृत्य, साहित्य और रंगमंच के प्रति गहरा लगाव पैदा हुआ। प्रारंभ में उन्नाव में कुछ समय बिताया, फिर प्रभात फ़िल्म कंपनी में एक कोरियोग्राफ़र के तौर पर उन्होंने अपने सफ़र की शुरुआत की। वहाँ उन्होंने अभिनय, निर्देशन और पटकथा के विविध आयामों को सीखा। उनके जीवन में जो गहराई थी, वो महज़ निजी अनुभवों का परिणाम नहीं थी, बल्कि संवेदनशीलता की वह तह थी जो कला को सच्चे अर्थों में जीवन देती है। उनकी फ़िल्म प्यासा एक क्रांति थी। यह महज़ एक शायर विजय की कहानी नहीं थी, बल्कि उन तमाम सच्चे और संवेदनशील इंसानों की कहानी थी जिन्हें दुनिया समझ नहीं पाई। ये वो फ़िल्म थी जो आज के दौर में भी सवाल पूछती है क्या सचमुच अच्छाई, सच्चाई, मोहब्बत और सृजनशीलता को समाज में इज़्ज़त मिलती है? या ये सब सिर्फ़ किताबों तक महदूद रह जाते हैं? गुरुदत्त ने यह सवाल बहुत पहले पूछा था, और शायद इसीलिए प्यासा आज भी जिंदा है।संगीत के स्तर पर भी उन्होंने भारतीय सिनेमा को नई ऊँचाई दी। साहिर लुधियानवी और एस. डी. बर्मन के साथ उनकी जुगलबंदी ने ऐसे नग़मे दिए जो सीधे दिल में उतरते हैं। 'जाने वो कैसे लोग थे' जैसे गीत सिर्फ़ गाने नहीं हैं, वो सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक विडंबनाओं का आइना हैं। गुरुदत्त की फ़िल्में गीतों को कहानी का हिस्सा नहीं, उसकी आत्मा बना देती थीं। कई समीक्षकों का मानना है कि गुरुदत्त की फ़िल्मों में एक किस्म की उदासी और तन्हाई का रंग प्रमुख था। मशहूर फ़िल्मकार सत्यजीत रे ने एक बार कहा था, 'गुरुदत्त की फ़िल्में तकनीकी और भावनात्मक दोनों स्तरों पर उस वक़्त की हिंदी फ़िल्मों से कहीं आगे थीं। वह कैमरे के ज़रिए कविता लिखते थे।'

सत्यजीत रे का यह कथन सिर्फ़ प्रशंसा नहीं, बल्कि गुरुदत्त की सिनेमाई भाषा की गहराई को समझने की एक कुंजी है। उनकी फ़िल्म काग़ज़ के फूल को उस समय आलोचना का सामना करना पड़ा, मगर समय के साथ यह फ़िल्म एक 'कल्ट क्लासिक' बन गई। यह फ़िल्म जैसे किसी टूटे हुए इंसान का आख़िरी ख़त हो जिसमें चमकते सैट्स, तेज़ रोशनी और सन्नाटे के बीच सिर्फ़ एक आवाज़ गूंजती है अकेलेपन की। गुरुदत्त की आत्महत्या को लेकर भी बहुत कुछ कहा गया। कुछ इसे अवसाद का परिणाम मानते हैं, कुछ अधूरी मोहब्बतों की टीस। पर शायद सबसे सच्चा जवाब यही है कि एक ऐसा इंसान जो ज़माने से आगे चल रहा हो, वो अक्सर ज़माने के बीच अपने लिए जगह नहीं बना पाता। गुरुदत्त की नज़रों में औरों से अलग देख पाने की जो सलाहियत थी, वही उनकी ताक़त भी थी और शायद दर्द भी। उन्होंने औरतों के किरदारों को जिस तरह पर्दे पर उभारा, वह उस समय के सिनेमा के लिए बेमिसाल था। साहिब बीबी और ग़ुलाम की छोटी बहू, केवल एक कैरेक्टर नहीं, बल्कि उस दौर की स्त्री की छुपी हुई चीख़ थी – जिसे गुरुदत्त ने बड़े आदब और तासीर के साथ बयान किया। आज जब हम सौ साल बाद पीछे देखते हैं, तो महसूस होता है कि गुरुदत्त कोई इंसान नहीं, एक एहसास थे। एक ऐसा एहसास जिसे कैमरे ने छू तो लिया, पर पूरी तरह पकड़ न सका। उनका जाना सिर्फ़ एक कलाकार का खो जाना नहीं था, बल्कि उस उम्मीद का बुझ जाना था कि शायद फ़िल्में दिल से बन सकती हैं, तिजारत से नहीं। इस दौर में जब सिनेमा तकनीक और चमक-धमक में उलझा हुआ है, गुरुदत्त हमें याद दिलाते हैं कि फ्रेम के पीछे भी एक दिल होता है, एक सोच होती है, एक सिसकी होती है। आज जब युवा फ़िल्मकार अपने सफ़र की शुरुआत करते हैं, उन्हें गुरुदत्त को सिर्फ़ एक प्रेरणा नहीं, एक चेतावनी की तरह भी देखना चाहिए कि सच्ची कला की राह आसान नहीं होती। गुरुदत्त की शतजयंती पर उन्हें याद करना, सिर्फ़ अतीत को श्रद्धांजलि देना नहीं है बल्कि यह स्वीकार करना है कि सिनेमा का एक सुनहरा सपना आज भी अधूरा है, और हमें उसे आगे बढ़ाना है। क्योंकि ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है? गुरुदत्त साहब आप इस दुनिया से चले गए, मगर आपके सवाल अब भी यहीं हैं और यही आपकी सबसे बड़ी जीत है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

धर्म-आस्था

परविंदर शर्मा

लेखक जगत गुरु नानक देव पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, पटियाला में भगवान श्री परशुराम पीठ के अध्यक्ष एवं सहायक आचार्य हैं।

भगवान परशुराम से पहचान पा रहा गांव रकासन

पिछले लंबे वर्षों से पंजाब के अंतर्गत एक छोटा सा गांव रकासन चर्चा में आ गया है। यह गांव नए शहर से 22 किलोमीटर की दूरी पर, राहों से तकरीबन 12 किलोमीटर की दूरी पर और बलाचौर से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रकासन का अर्थ होता है ऋषियों का आसान। विद्वानों और बुद्धिजीवियों ने रकासन गांव को भगवान श्री परशुराम की जन्मस्थली बताया है।

अनुमान है कि यह मंदिर तकरीबन 2000 से 2500 वर्ष पुराना है। इस मंदिर की जानकारी खुदाई में प्राप्त हुई सामग्री जैसे पत्थर और शिल्प से मिली थी। भारत पर लंबे समय तक मुगलों और अंग्रेजों का शासन रहा है। इस दौरान अनेक धार्मिक स्थलों को नष्ट किया गया था। इसी आधार पर कहा जाता है कि छोटे से गांव रकासन का मंदिर भी नष्ट किया गया था क्योंकि इस गांव के आसपास के अन्य गांवों में भी ऐसे ही मंदिन नष्ट करने के निशान हैं। इस गांव के आसपास के गांवों से लोग किसी भी शुभ अवसर पर अपनी रस्मों को पूरा करने के लिए माता रेणुका का आशीर्वाद लेने यहां आते हैं। इससे इस स्थान की महत्वता और प्राचीनता के बारे में पता चलता है।

बताया जाता है कि गांव के एक ब्राह्मण को सपने में भगवान परशुराम ने सपने में इस जगह के बारे में बताया था और उसी जगह के ऊपर अपना स्थान बनाने के लिए कहा था। यह स्थान माता रेणुका मंदिर से 50 मीटर पहले दाहिनी तरफ स्थित है। सपने के बाद गांव वालों ने बताई गई जमीन पर खुदाई की गई। इस खुदाई में अनेक ऐतिहासिक चिह्न, पत्थर एवं ईंटों के टुकड़े प्राप्त हुए जो यह मंदिर की प्राचीनता को दर्शाते हैं। इनका संरक्षण किया गया है।

भगवान श्री परशुराम जी के इस मंदिर बारे लंबे समय बाद पता चल सका है। जानकारी के मुताबिक 2017-18 में पहली बार गांव वालों मंदिर का निर्माण शुरू करवाया। इसका मुख्य श्रेय ब्राह्मण परिवार के ही वंशज राकेश कुमार सिंबा को जाता है। इस मंदिर के निर्माण के लिए पूरी टीम तैयार हो गई है जो कि आज के समय में इस तरफ विशेष ध्यान दे रही है।

सरकार ने भी इस क्षेत्र के विकास की ओर ध्यान दिया हे। सबसे पहले मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने ब्राह्मण समाज और इस इस मंदिर के लिए 75 लाख रुपए की राशि दी। भगवान श्री परशुराम से जुड़ी खोज का काम और उनका स्पष्ट रूप सामने समाज के आ सके उसके लिए भगवान श्री परशुराम चेयर जगत गुरु नानक देव पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी पटियाला की झोली में राशि डाली गई। इस राशि के सहयोग से मंदिर का निर्माण शुरू हुआ।

मंदिर के अंदर तीन दरबार स्थापित किए गए। सामने भगवान श्री परशुराम जी का, बाएं तरफ माता रेणुका जी का और दाएं तरफ शिव भोले शंकर को स्थापित किया गया। इसके अलावा मंदिर के अंदर पूरा शिव परिवार,राम दरबार और माता शेरावाली की मूर्तियां भी स्थापित की गई है। मंदिर के सामने माता रेणुका जी का एक मंदिर भी स्थापित है जो कि किसी समय एक मटी हुआ करती थी। साथ ही एक लंगर हाल भी वहां पर स्थापित किया गया है।

पिछले दिनों केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने इस पवित्र स्थान पर पहुंच कर भगवान श्री परशुराम का आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने इस स्थान को संस्कृति एवं पर्यटन के बड़े केंद्र के रूप में विकसित करने की घोषणा की। पिछले दिनों में यहां पर एक बड़ा कार्यक्रम भी हुआ जिसमें पंजाब के मीत प्रधान सुभाष शर्मा की तरफ से भी भगवान परशुराम की इस जन्म स्थली को तीर्थ स्थल बनाने के लिए प्रसाद स्कीम के अधीन लाने की घोषणा की गई है।

इन प्रयासों से नया शहर का यह छोटा सा गांव रकासन पूरी दुनिया में भगवान परशुराम की जन्मस्थली के रूप में अपनी पहचान बना लेगा। भगवान परशुराम किसी एक समाज, एक वर्ग के न होकर पूरे विश्व के कल्याण करने वाले हैं। इस खोज के साथ भगवान परशुराम के सिद्धांतों को जन-मानस के सामने रखा जा सकेगा।

अमेरिका पार्टी के गठन के बावजूद चुनाव नहीं लड़ सकेंगे एलन मस्क

विश्व राजनीति

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

रुपे एस एक्स और टेस्ला के स्वामी एलन मस्क विश्व के अत्यंत धनाढ्य नवकुबेर हैं। वह महत्वाकांक्षी भी हैं और उन्होंने कई ऊंचे मंसूबे बाँध रखे हैं। किस्सा कोताह यह कि वह तिजारत और सियासत एक साथ करना चाहते हैं। अमेरिका पार्टी का गठन उनकी इस सोच की परिणति है, अलबत्ता उनके इस अप्रत्याशित कदम ने यकबयक अनेक प्रश्न खड़े कर दिये हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और धनाढ्यतम एलन मस्क के मध्य रोमांस का दौर लंबा चला। यह सर्वमान्य धारणा है कि बिना मस्क के सक्रिय सहयोग के ट्रंप राष्ट्रपति की कुर्सी तक दोबारा नहीं पहुंच सकते थे। खुले समर्थन के अलावा मस्क ने ट्रंप की जीत के लिये करीब 250 मिलियन डॉलर की तगड़ी रकम खर्च की। बदले में ट्रंप उनके एहसानमंद हुये और उन्होंने डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफीसियेंसी का महकमा उन्हें सौंप दिया।

महत्वपूर्ण मौकों पर मस्क उनके बगल में नजर आने लगे। मगर यह रोमांस ज्यादा दिन चला नहीं और गलबहियों का दौर बदमजगी और खटास में बदल गया। पारस्परिक अलगाव का बायस बना ट्रंप का बिग ब्यूटीफुल बिल। मस्क ने इसके लिये ट्रंप की जमकर लानत मलामत की तो ट्रंप ने उन्हें खरी खोटी सुनाकर उन्हें अमेरिका से निकालने और उनकी कंपनियों को संघीय सहायता से मोहताज करने की धमकी दे डाली। मस्क ने कहा कि ट्रंप का कानून अमेरिका को दिवालिया कर देगा। उन्होंने ट्रंप को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि इससे आगामी दस वर्षों में 3.4 ट्रिलियन डॉलर का बोझ पड़ेगा और कर्ज की गठरी भारी होगी। ट्रंप ने जवाबी मोर्चा खोलते हुये कहा कि मैं मस्क से बहुत निराश हूँ। मैंने उनकी बहुत मदद की। उन्होंने दलील दी कि करों में कटौती से अमेरिकी नागरिकों के हित सधेंगे। मस्क जितनी संघीय मदद किसी को नहीं दी गयी और यदि इसे बंद कर दिया जाये तो जनाब मस्क फर्श पर आ जाएंगे। जाहिर है कि दो दिग्गजों का याराना खत्म हुआ और अब दोनों ताकतवर यार एक दूसरे की ओर पीठ कर खड़े हुये हैं। इधर अमेरिका के 249वें स्वतंत्रता दिवस पर ट्रंप का कानून लागू हुआ, उधर मस्क ने अगले ही दिन अमेरिका पार्टी के गठन का ऐलान कर अपने इरादों का सुबूत दे दिया। उन्होंने तीखे बयान में कहा कि हम गैर-जरूरी खर्च और भ्रष्टाचार से बर्बाद करने वाली व्यवस्था में जी रहे हैं। अमेरिका पार्टी के गठन का मकसद है कि अमरीकियों को दोबारा आजादी मिल सके। उन्होंने डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दोनों पार्टियों को इस तरह निशाने पर लिया कि उनकी नजरों में दोनों एक ही थैले के चट्टे बट्टे हैं। ज्यादा पांव नहीं पसारने की रणनीति के तहत उन्होंने कहा कि अभी उनका लक्ष्य सीनेट की कुछ सीटों और आठ-दस हाउस डिस्ट्रिक्ट्स तक सीमित होगा। वह अपना ध्यान मिडटर्म निर्वाचन पर केंद्रित करेंगे जो 2026 में होगा।

इसमें शक नहीं कि मस्क राष्ट्रपति ट्रंप को अस्थिर और पंगु करने की रणनीति पर चल रहे हैं। अमेरिका के सियासी मिजाज को देखते हुये उनके लिये क्वांटम-लीप यूं भी संभव नहीं है। अमेरिका में दो सदियों से अधिक की राजनीति में द्विदलीय प्रणाली हावी रही हैं। वहां डेमोक्रेट और रिपब्लिकन प्रत्याशी व्हाइट हाउस पहुंचते रहें हैं। बहुत कम मौके आये हैं, जब तीसरी ताकत को उलटफेर में कामयाबी मिली हो। सन 1912 में राष्ट्रपति रहे रूजवेल्ट को विलियम हॉवर्ड टाफ्ट के खिलाफ 27.4 फीसद वोट और 88 इलेक्ट्रोरल वोट मिले थे, फलतः डेमोक्रेट वुडरो विल्सन ने बाजी मार ली थी। इसी तरह सन 1968 में जार्ज वैलेस को दक्षिणी राज्यों में अच्छा समर्थन मिला था। सन 1972 में अरबपति व्यावसायी रास पेरोट निर्दल खड़े हुये तो उन्हें 19 प्रतिशत वोट मिले। उन्हें इलेक्टोरल कॉलेज का समर्थन तो नहीं मिला, लेकिन उन्होंने डेमोक्रेट बिल क्लिंटन की जीत और जार्ज बुश की हार का सामान जुटा दिया। इसी क्रम में सन 2000 में ग्रीन पार्टी के राल्फ नेडर को 27 फीसद वोट मिले और इस समर्थन ने चुनाव में रिपब्लिकन जार्ज डब्लू बुश की जीत की राह खोल दी और डेमोक्रेट अल गोरे को पराजय का घूंट पीना पड़ा।

जाहिर है कि मस्क के लिए दोनों प्रमुख पार्टियों के मजबूत ढाँचे से टकराना और पार पाना कठिन होगा। अमेरिका में निर्वाचन नियमावलि उन्हें पांव टिकाने का ठौर नहीं देती। मस्क पार्टी गठन के पूर्व किये सर्वे की दुहाई भले ही दें लेकिन उनके लिये 'बैलेट-एक्सेस' कठिन होगा। मतपत्रों पर नोंदणी या इंद्राज की प्रक्रिया लंबी है। टीवी पर बहस के लिये भी राष्ट्रीय स्तर पर 15 प्रतिशत समर्थन चाहिये। इसी के चलते 'विनर टेक आल' के मिजाज के अमेरिका में जार्ज टाउन विश्वविद्यालय के प्रो. हांस नोएल मानते हैं कि छोटी पार्टियों के लिये पांव टिकाना मुश्किल है। एसेक्स विश्वविद्यालय की नताशा लिंडस्टैड कहती हैं कि मस्क के पास धन तो है, लेकिन क्या वह जोखिम उठा सकेंगे? बहरहाल नयी पार्टी को लेकर उत्सुकता तो है किंतु राजनीति श्रम और समय साध्य खर्चीली तथा धैर्यपूर्ण प्रक्रिया है। यही नहीं, सियासत और तिजारत के तकाजे भी अलग-अलग होते हैं। एलेन मस्क ने अपनी रणनीति बताते हुए ग्रीक सेनापति एपेमिनोडास का उदाहरण दिया है कि एक विशेष ठौर शक्ति केंद्रित कर जीत हासिल करो। लेकिन उनका पाला उस ट्रंप से पड़ा है, जो खुद नहीं जानते कि वह कब क्या कहेंगे और करेंगे? इसी के चलते उन्होंने मस्क को अमेरिका से निष्कासन की धमकी दी है। समझा जाता है कि ऐसा उन्होंने स्टीव बेनन की सलाह पर किया है। मस्क का जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ और वह सन 1995 में स्टूडेंट वीजा पर अमेरिका आये थे। उन्हें सन 2002 में अमेरिका की नागरिकता मिली। यह उनका दुर्भाग्य है कि राष्ट्रपति का चुनाव नहीं लड़ सकते, क्योंकि राष्ट्रपति होने के लिये जन्मना अमेरिकी होना जरूरी है।

साहित्यकारों के मोहल्ले में सिर कटी लाश

वक्रोक्ति

सारिका गुप्ता

युवा लेखक

देश के आम मोहल्लों में आम लोग रहते हैं, जो ख़ास मौकों पर भी आम हरकतें करते हैं। ये लोग अपने आमपन के इतने आदी होते हैं कि इनकी आम ज़िन्दगी में कोई ख़ास ख़लल पड़ जाए तो ये आम रुख अपनाते हुए कोर्ट-कचहरी तक पहुँच जाते हैं। और तो और छेड़छाड़ जैसी नितांत व्यक्तिगत और मानव स्वभाव के अनुकूल क्रियाओं पर भी थाने में शिकायत कर देते हैं। लेकिन जिस मोहल्ले की हम बात कर रहे हैं वो कोई आम मोहल्ला नहीं है। ये साहित्यकारों का मोहल्ला है, जिसे आप तीसरी दुनिया भी कह सकते हैं।

तो बात ऐसी है कि साहित्यकारों के मोहल्ले में अल सुबह एक सिर कटी लाश पायी गयी, वो भी एक साहित्यकार की। मारने वाला मोहल्ले का ही एक बड़ा साहित्यकार था। ख़बर उड़ी और गाँव में हैजे की तरह फैल गयी। थोड़ी ही देर में लाश के इर्दगिर्द अच्छी खासी भीड़ जमा हो गयी । इतनी भीड़ तो कभी उन कार्यक्रमों में भी नहीं रही जिनमें लाश ने ज़िन्दा हालत में अपनी रचनाएँ पढ़ी थीं। लाश के लिए ये एक 'ड्रीम मोमेन्ट' था। एक पल को उसे ख्याल भी आया कि अच्छा ही हुआ उसका खून हो गया, वरना जीते जी ये मंज़र कहाँ नसीब होता।

बहरहाल, वहाँ मौजूद कुछ उदीयमान कवियों का मानना था कि ये न मारते तो जिस तरह की कविताएँ मरने वाला लिखता था उसे पढ़कर कोई न कोई तो उसे मार ही देता। फिर भी जान से मारना एक हिंसक क्रिया है जो कि निन्दनीय है। कुछ लोग इसे मर्डर भी कह रहे थे, लेकिन वरिष्ठ साहित्यकारों ने इस पर सख्त आपत्ति ली- 'यहाँ एक साहित्यकार के हाथों एक साहित्यकार की मौत हुई है, इसे मर्डर कहना सरासर ग़ैर साहित्यिक विलाप होगा, लिहाज़ा इसे क़त्ल ही कहा जाये। वहाँ मौजूद अन्य साहित्यकारों ने भी माना कि 'हाँ, हाँ, इसे कत्ल ही कहा जाना चाहिए, या हिन्दी पट्टी के लोग इसे मानव वध या और भी कुछ कह सकते हैं लेकिन मर्डर तो कतई नहीं ।'

घटना का नामकरण हो जाने के बाद, लेखक-लेखिकाओं का जुलूस क़ातिल के ठिये पर पहुँचा । इधर, क़त्ल के बाद थका हारा क़ातिल अपने लेखन कक्ष में क़त्ल के सम्बन्ध में अपने अनुभव लिख रहा था, जो भविष्य में एक रोचक संस्मरण हो सकता था । लेकिन तभी बाहर खड़े जलकुकड़े लेखकों ने उनकी साहित्य साधना में विघ्न डाल दिया । क़ातिल को बाहर बुलवाया गया और कोरस में उसे लानत इत्यादि भेजीं गयीं- 'आपको शर्म नहीं आती इस तरह कत्ल करते हुए ? ये सरासर अभद्रता है । बड़े लेखक होने का मतलब ये नहीं है कि आप किसी की मुण्डी ही उड़ा दें । कोई साहित्यिक तरीका भी तो हो सकता था उसे मारने का । आप लेखक नहीं बल्कि लेखक के भेस में इंसानियत के क़ातिल हैं क़ातिल!'

नवोदित लेखिकाओं के मुख से स्वयं के लिए 'क़ातिल' शब्द सुनकर लेखक के कलेजे को ठण्डक पहुँची । उनकी बरसों की ठरक पूरी हुई ।

बहरहाल, तमाम लानत मलामत के बाद, क़ातिल को उसकी पांडुलिपियों सहित मोहल्ले से बाहर निकाल दिया गया। कुछ लेखकों ने धक्का भी मारना चाहा लेकिन क़ातिल बड़े लेखक थे, और कभी भी काम लग सकते थे या काम लगा भी सकते थे, इसलिए फ़िलवक्त उन्हें धक्का मारने का प्लान रद्द करना पड़ा और लेखकों ने आपस में ही एक दूसरे को धक्का मारकर अपनी तमन्ना पूरी कर ली । हालाँकि क़ातिल को अपने बाहर निकाले जाने पर कोई ख़ास अफ़सोस न था। वैसे भी, कत्ल के बाद से वे काफ़ी अपसेट थे, जो कि लिखने के लिए एक अनुकूल मूड था। मोहल्ले में जो क्रान्ति का माहौल था, वो प्रेम कविताओं और ठरकी गद्य के लिए कतई अनुकूल न था । लिहाज़ा उन्होंने पहली फ़ुर्सत में मोहल्ला छोड़ दिया।

इधर, सिर कटी लाश जुलूस के वापस लौटने का इंतज़ार कर रही थी । इस वाक़िये पर वो भी कुछ कहना चाहती थी, लेकिन वो एक लाश थी, वो भी एक साहित्यकार की, वो लाश होने के तौर-तरीके जानती थी इसलिए चुपचाप पड़ी रही ।

साहित्य कुल के सामने अब मसला ये था कि इस पाप की सज़ा क्या हो । कुछ का विचार था कि एक बड़ा आयोजन किया जाए और उसमें डेड बॉडी को समर्पित ऐसी ऐसी दर्द भरी कविताएँ

पढ़ी जाएँ कि क़ातिल के कानों से खून बहने लगे और वो पश्चाताप की अग्नि में जलकर भस्म हो जाए। हालाँकि लाश को ये आइडिया कुछ ख़ास पसन्द नहीं आया, कविताओं से भी कोई मरता है भला! लेकिन वो अपने लाशपने के आगे विवश थी, कुछ कह नहीं सकती थी, इसलिए उसने पड़े पड़े ही क़ातिल को एक साहित्यिक शाप दे डाला- 'आग लगे आपकी पांडुलिपियों को! जाइए आपको कोई छापने वाला न मिले! सात जनम तक आप साहित्यिक सम्मान के लिए तरसते रहें।' यहाँ गौर करने वाली बात ये है कि लाशग्रस्त अवस्था में भी साहित्यकार अपनी तहज़ीब नहीं भूलता, शाप में भी उसने अपने क़ातिल को आप कहकर ही सम्बोधित किया।

इधर, साहित्य समाज अलग सन्ताप से जूझ रहा था कि आख़िर क़त्ल की सज़ा क्या हो? वरिष्ठ साहित्यकारों का मानना था कि जिस तरह लिखने वालों की संख्या बढ़ रही है पाप भी बढ़ेंगे ही। इसलिए क्यों न छायावादी काव्यात्मक शैली में अपनी एक 'साहित्यिक दण्ड संहिता' की रचना कर ली जाए ताकि हर बार का टंटा ख़त्म हो। सभी साहित्यकारों को ये आइडिया बहुत जमा। सभी ने माना कि साहित्य जगत में ये एक ऐतिहासिक क़दम होगा । लेकिन मामला फिर मोहल्ले में पड़ी ताज़ा लाश पर आकर अटक गया, फ़िलहाल उसे किस तरह न्याय दिलवाया जाए। आख़िरकार, ये तय हुआ कि सोशल मिडिया पर एक हस्ताक्षर अभियान चलाया जाए और लाइव चर्चा, कविता इत्यादि के माध्यम से क़ातिल की घोर निन्दा की जाए। एक उभरती हुई कवियित्री जो लाश देखकर अब तक सदमे में थी, ने लाश को डेडीकेट करते हुए रातों-रात एक कविता लिखी -

'लाश पड़ी उजियारे में
हम बैठे अंधियारे में
जाएँ अब किस ओर बताओ
कातिल खड़ा गलियारे में
चुप है टेबल चुप है बोतल
चप्पा चप्पा मौन हुआ
चुप्पों के इस देश में बोलो
इस पाप की कोई सज़ा है क्या ?'

कविता निकली और दूर तलक गयी । कविता पढ़कर आम लोगों के मोहल्ले से एक निहायती आम आदमी ने तीसरी दुनिया के लोगों को चिट्ठी लिखी- 'महोदय, जो आपके मोहल्ले में घटित हुआ है, हमारे यहाँ उसे मर्डर या हत्या कहते हैं और हमारे इधर के कानून में बाक़ायदा इसके लिए मृत्यु दण्ड अथवा आजीवन कारावास की सज़ा है । आप चाहें तो लाश को ठिकाने लगाए बिना हमारी वाली दण्ड संहिता का लाभ ले सकते हैं ।'

ये जानकर साहित्यकारों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि मोहल्ले के बाहर ऐसी भी कोई व्यवस्था है ? क्या सचमुच वहाँ मृत्यु के लिए आजीवन कारावास की सज़ा है ? लेकिन फिर भी, उन्हें बाहरी दुनिया का ये ऑफर कतई मंजूर न था । साहित्यिक बवाल साहित्यिक तरीके निपटाये जाए तो ही ठीक रहता है । इसलिए फ़िजूल की क़ानूनी बातों पर ध्यान न देते हुए साहित्यकारों ने अपना निन्दा प्रोग्राम जारी रखा । प्रोग्राम काफ़ी हिट रहा । निन्दा का अन्तिम सेशन दिल्ली पुस्तक मेले में संपन्न हुआ । वहाँ क़ातिल को भी बुलाया गया, पश्चाताप के ताप में उनकी स्किन टैन हो गयी थी। उनकी नयी क़िताब भी पश्चाताप पर ही थी, जिसमें उन्होंने अपना क़ातिलाना सत्य स्वीकार किया था। मंच पर उन्होंने क़त्ल में इस्तेमाल हुए चाकू का बाक़ायदा विमोचन भी कर दिया, जिसे कत्ल की स्मृति के रूप में सेंट्रल लाइब्रेरी के बीचोबीच काँच के मर्तबान में रखा गया। उसके बाजू में, लाश द्वारा रचित कविताओं की कुछ पंक्तियाँ पीतल की फ्रेम में लटका दी गयीं, जिससे कि किसी को उसके मरने का ज़्यादा अफ़सोस न हो । इस तरह एक साहित्यिक बवाल का रोमान्टिक अन्त हुआ। क़त्ल इत्यादि के मामले में इससे ज़्यादा भला और क्या किया जा सकता था?

सरस्वती शिशु मंदिर की वार्षिक कार्ययोजना पुस्तिका का हुआ विमोचन

धार। सरस्वती शिशु मंदिर में वार्षिक कार्ययोजना पुस्तिका सत्र 2025-26 का विमोचन हुआ । विद्यालय के पूर्व आचार्य देवेंद्र शर्मा, प्राचार्य प्रमोद गुंजाल एवं मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ जिला अध्यक्ष अविनाश डावर ने कार्ययोजना पुस्तिका का विमोचन किया । इन वार्षिक पुस्तकों में अक्सर छात्रों की रचनात्मकता, विद्यालय की गतिविधियों और भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा से संबंधित सामग्री शामिल होती है। विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिरों में संस्कृति बोध परियोजना के अंतर्गत प्रति वर्ष संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया जाता है, जिसके लिए भी विभिन्न पुस्तकों का विमोचन होता है। ये पुस्तकें छात्रों को भारतीय संस्कृति, इतिहास, महापुरुषों और धर्म-अध्यात्म का ज्ञान प्रदान करने में सहायक होती हैं। यह कार्यक्रम न केवल अकादमिक उपलब्धियों का जश्न मनाता है, बल्कि छात्रों को सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों से भी जोड़ता है। कार्यक्रम में भैय्या बहन के साथ आचार्य दीदी उपस्थिति थे।

धूमधाम से मनाया जाएगा कल गुरु पूर्णिमा उत्सव

बैतूल। संत गजानन मंदिर समिति के तत्वावधान में कल मराठी मोहल्ला कोठीबाजार में संत गजानन मंदिर में कल गुरुवार को गुरु पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। संत गजानन मंदिर समिति के अध्यक्ष संतोष कमाविसदार ने बताया कि इस अवसर पर कल प्रातः 5 बजे काकड़ा आरती, 6 बजे से सदुरू का जाप 10 बजे से 11.30 बजे तक महाभिषेक, दोपहर 12 बजे से 12.30 बजे तक सामूहिक हवन, महाआरती, दोपहर 1.30 बजे से रात्रि 8 बजे तक महाप्रसादी वितरण किया जाएगा। श्री कमाविसदार ने सभी से उपस्थित होने का आग्रह किया है।

बाइक चोर गिरफ्तार, दो महीने में चुराई तीन गाड़ियां बरामद

बैतूल। मुलताई थाना पुलिस ने बाइक चोरी के आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से चोरी की तीनों गाड़ी बरामद की गई हैं। जानकारी के अनुसार मुलताई थाना क्षेत्र में अलग-अलग जगहों से तीन बाइक चोरी हुई थीं। 6 जून को न्यायालय परिसर से एमपी 50 एमके 7751, 24 अप्रैल को बालाजी सर्विस सेंटर के पीछे से एमपी 48 एमडब्ल्यू 2082 और 16 जून को जलाराम मंदिर के सामने से एमपी 04 क्यूवी 3049 नंबर की बाइक चोरी की गई थी। पुलिस ने तीनों मामलों में अलग-अलग प्रकरण दर्ज किए। घटनास्थलों और टोल नाकों के सीसीटीवी फुटेज की जांच की गई। एक मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर आरोपी सातनेर निवासी राहुल ठाकरे (43) को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में उसने तीनों चोरी की बात कबूल कर ली। पुलिस ने टीआई निरीक्षक देवकरण डेहरिया के नेतृत्व में कार्रवाई की।

जिले में अब तक लगभग 12 इंच बारिश, पिछले साल से 4.5 इंच अधिक

लगातार बारिश से नदी-नाले उफने, माचना का बढ़ा जलस्तर, भड़ंगा में आई बाढ़

बैतूल। जिले में पिछले एक सप्ताह से लगातार बारिश हो रही है। बारिश के कारण माचना सहित अन्य नदी-नाले उफान पर आ गये है। कहीं-कहीं कम ऊंचाई वाले पुल-पुलिया पर बाढ़ के हालात बने हुए है। जिससे आवागमन प्रभावित हो गया है। पिछले 24 घंटे के दौरान जिले में दो इंच से ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। मौसम विभाग ने 9 जुलाई के लिए ऑरेंज और 10 जुलाई के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। इस बार जुलाई माह की शुरुआत से ही जिले में लगातार बारिश हो रही है, लेकिन रविवार रात से जिले में बारिश का क्रम अनावरत जारी है। इससे कई सडके पानी से लबालब रही और जन जीवन भी अस्त-व्यस्त हो गया। लगातार बारिश से अधिकतम तापमान भी 23.7 डिग्री पर पहुंच गया। वहीं न्यूनतम तापमान 20.8 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने आगामी दिनों बैतूल सहित प्रदेश के अन्य शहरों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश में वर्तमान में तीन मजबूत बारिश प्रणालियां सक्रिय हैं। इनके प्रभाव से 9 और 10 जुलाई को भी बारिश जारी रहने का पूर्वानुमान है। मौसम विभाग के अनुसार यह इस मौसम का सबसे मजबूत सिस्टम है।

माचना उफान पर, भडंगा नदी ने रोका रास्ता: शाहपुर की भड़ंगा नदी में बाढ़ आई है। देर रात को शाहपुर क्षेत्र में भारी बारिश जारी रही। इसके चलते पुनर्वास क्षेत्र के 7 से अधिक गांवों से आवागमन अवरुद्ध हो गया। इससे स्कूल जाने वाले बच्चों एवं साप्ताहिक बाजार चोपना आने वालों ग्रामीणों को असुविधा हुई। वहीं लखीपुर और धरमपुर के पास भडंगा नदी के पुलों पर भी बाढ़ रहने से आवागमन प्रभावित रहा। वहीं पुनर्वास क्षेत्र के धरमपुर, आमडोह, लखीपुर, चोपना, झोली-1 व 2 और कांटावाड़ी के रास्ते बंद हो गये है। बताया जा रहा है कि भारी बारिश से भड़ंगा और माचना नदी का जलस्तर बढ़ा है। भड़ंगा में आई बाढ़ से रामपुर और झोली का रास्ता बंद हो गया है। चोपना-झोली मार्ग पर आवाजाही प्रभावित हुई है। लोगों को 12 किलोमीटर का अतिरिक्त फेरा लगाना पड़ रहा है।

पिछले साल से 4.5 इंच बारिश अधिक : बैतूल जिले में लगातार हो रही बारिश ने पिछले साल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है। बीते 24 घंटों से बैतूल में रूक-रूककर बारिश जारी है। सोमवार सुबह 8 बजे से मंगलवार सुबह आठ बजे तक 57.5 मिमी बारिश दर्ज की गई। इस दौरान बैतूल में 46.6 मिमी, घोड़ाडोंगरी में 138.0, चिचोली में 48.0, शाहपुर में 75.0, मुलताई में 54.6, प्रभात पट्टन में 36.5, आमला में 60.0, भैसदेही में 15.0, आठनेर में 46.2, भीमपुर में 55.0 मिमी बारिश दर्ज की है। मंगलवार सुबह 8 बजे तक जिले में कुल 288.0 मिमी यानि 11.52 इंच बारिश हो चुकी है। पिछले साल 8 जुलाई तक 182.4 यानि 7.2 इंच बारिश ही हो पाई थी।

किसानों को खेत में पानी न थमने देने की सलाह : लगातार बारिश का असर फसलों पर पड़ सकता है। इसलिए कृषि विभाग ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए सलाह दी है कि किसान अपने खेतों में पानी इकठ्ठा न होने दे। क्योंकि धूप नहीं खिलने और बारिश होने से फसलों की जड़े प्रभावित हो सकती है।

कई जगह खेतों में पानी का जलजमाव हो रहा है। जिससे सोयाबीन, मक्का सहित अन्य खरीफ फसल प्रभावित होने की संभावना है। कृषि विभाग के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि जिले में लगातार बारिश होने का क्रम जा रही है। ऐसे में किसान खेतों में जलजमाव न होने दे। खेतों से पानी निकासी की पर्याप्त व्यवस्था बनाये रखे। वैसे खरीफ बरसाती फसल है, इसलिए ज्यादा असर नहीं पड़ता है। लेकिन बस किसानों को खेतों से पानी निकालने की व्यवस्था बनाकर रखना होगा।

रोजाना खोलने पड़ रहे सतपुड़ा डैम के गेट .....

सतपुड़ा के कैचमेंट एरिया में झमाझम बारिश होने से जलाशय का वाटर लेवल लगातार बढ़ रहा है। जिसके कारण डैम के गेट खोलने पड़ रहे है। प्राप्त जानकारी के अनुसार सारणी के सतपुड़ा बांध क्षेत्र में 24 घंटे के दौरान हुई 6 इंच बारिश के चलते रात 3 बजे से बांध के 7 गेट 5-5 फुट खोले गए हैं। बांध को 1429.50 फुट पर मेंटेन रखने के लिए लगातार गेट की एक्टिविटी जारी है। सोमवार रात 8 बजे तक 3 फुट के स्तर पर खोला गया था, जिसे बाद में 5-5 फुट कर दिया गया है। इससे 17 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। जिले में बारिश का आंकड़ा पिछले साल से 4.2 इंच ज्यादा हो गया है। गत वर्ष 8 जुलाई की सुबह तक 7.2 इंच बारिश हुई थी, इस साल 11.4 इंच बारिश हुई है।

आर्म्स एक्ट के फरार आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। थाना गंज पुलिस ने आर्म्स एक्ट के एक फरार आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। 28 अगस्त 2024 को थाना गंज पुलिस को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई थी कि एक संदिग्ध व्यक्ति अंडरब्रिज क्षेत्र, गंज में काले रंग की टी-शर्ट एवं पीठ पर काले रंग का बैग लेकर देशी कट्टा सहित घूम रहा है। पुलिस को मुखबिर द्वारा बताए गए हुलिये का

व्यक्ति दिखाई दिया, जिसे घेराबंदी कर पकड़ा गया। पूछताछ पर उसने अपना नाम रहीम उर्फ बेटी उर्फ बिट्टू शाह पिता मेहबूब शाह उम्र 33 वर्ष निवासी तिलक वार्ड, कोठीबाजार, बैतूल बताया। तलाशी लेने पर उसके पास से एक देसी कट्टा एवं एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। पूछने पर वह उक्त हथियार का कोई वैध लाइसेंस प्रस्तुत नहीं कर सका। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसे यह हथियार माह जनवरी में अज्जू रावण निवासी बैतूल द्वारा बेचने हेतु दिया गया था। आरोपी द्वारा अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर अवैध हथियारों की खरीद-फरोख्त कर संगठित अपराधों को अंजाम दिया गया था। थाना गंज में धारा 25, 27 आर्म्स एक्ट एवं धारा 111 बीएनएस 2023 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

ध्यान से मिलता है मानसिक तनाव से छुटकारा

श्री अपना ध्यान, योग विज्ञान वर्कशॉप संपन्न

बैतूल/ मुलताई। पवित्र नगरी में श्री अपना ध्यान योग विज्ञान एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन विधायक चंद्रशेखर देशमुख के मुख्य अतिथि एवं नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर के विशेष अतिथि में संपन्न हुआ। श्री अपना ध्यान कार्यक्रम में रहस्यमयी विज्ञान को जानने के लिए परम पूज्य गुरुदेव अजय सिंहा के सानिध्य में मानसिक वर्कशॉप एवं रहस्यमयी विधियों का प्रशिक्षण दिया गया। श्री अपना ध्यान मानसिक वर्कशॉप में विशेष प्रशिक्षक रघुवीर रघुवंशी ने बताया कि व्यक्ति कोई भी कार्य जब पूरा ध्यान लगाकर करता है तो उसका परिणाम बेहतर होता है, प्रतिदिन ध्यान लगाने से मानसिक तनाव से छुटकारा मिलता है। श्री अपना ध्यान उपाध्यक्ष मनीष श्रीवास्तव ने बताया है कि मां ताप्ती की पावन धरा पर परम पूज्य गुरुदेव जी का आगमन होने जा रहा है।

ताप्ती एवं पटेल वार्डवासियों के लिए वर्षाकाल बना मुसीबत

सडक़ें बनी तालाब, हर तरफ पानी वार्डवासी परेशान

बैतूल/ मुलताई। दो दिनों से पवित्र नगरी में हो रही बारिश के चलते जनजीवन अस्त-व्यस्त है। ताप्ती एवं शनि सरोवर में जल आवक प्रारंभ हो गई है। नगर के पटेल वार्ड ,ताप्ती वार्ड एवं भगत सिंह वार्ड में जलभराव के चलते नागरिकों का घर से निकलना दुबर हो गया है अनेक घरों में पानी घुस जाने के समाचार मिले हैं।वर्षा काल प्रारंभ होते ही ताप्ती वार्ड एवं पटेल वार्ड वासियों के लिए कठिनाई काल प्रारंभ हो जाता है। घर आंगन मे छोटे-छोटे तालाब दिखाई देने लगे हैं। ताप्ती वार्ड निवासी युवक कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष लोकेश यादव बताते हैं कि बीते 2 दिनों से नगर में हो रही निरंतर वर्षा के कारण एक बार फिर ताप्ती वार्ड की सडक़ें जलमग्न हो गई। हनुमान मंदिर की सडक़ जलमग्न है। खाली प्लाटों में पानी जमा होकर घरों में घुसने लगा है। वार्डवासी लंबे समय से जलभराव की समस्या से निजात दिलाने की मांग करते रहे हैं, किंतु अब तक इस पर कोई कार्यवाही नहीं हो सकी।

जलभराव होता है, निकासी नहीं हो पाती है : पानी जमा रहने से गंदगी होती है। बीमारियां फैलती है। फिर भी हम यह सब बर्दाश्त करके यहां रहने पर मजबूर है। इसके लिए अनेकों बार अधिकारियों से इसकी शिकायत की किंतु कोई हल नहीं निकला। पटेल वार्ड के पार्षद सुरेश पौनीकर बताते हैं कि दो दिनों से हो रही वर्षा के चलते बेले कॉलोनी, हजारे के मकान के सामने अशोक भार्गव के मकान के नीचे वाले भाग में पानी भर गया है जिससे वार्ड वासियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। हमने अधिकारियों को अनेकों बार कहा एसडीएम से लेकर नगर पालिका के अनेक अधिकारी आए लोगों ने बड़े नालों को नाली में तब्दील कर दिया है। जिसके कारण जल भराव की समस्या आ रही है। हमने इन नालों के निर्माण की बात की किंतु 3 सालों में ना तो नालो का निर्माण हुआ है और ना ही सडक़ों का निर्माण हुआ है इसलिए बरसात चालू होते ही वार्ड वासियों की नींद हराम हो जाती है।

पार्षद का कहना, ताप्ती वार्ड के साथ हो रहा है पक्षपात: ताप्ती वार्ड गौशाला के पास बड़ा तालाब बन गया है, जिससे वार्ड वासियों में भारी रोष है। जल निकासी नहीं होने पर वार्ड वासी महिला पार्षद निर्मला उबनारे के घर पहुंचे। पार्षद निर्मला उबनारे जलभराव की समस्या देखने गौशाला के पास पास पहुंची और नगरपालिका अधिकारियों से तत्काल जल निकासी करने के लिए कहा। पार्षद निर्मला उबनारे बीते दो दिनों से वार्ड में घूम रही है। महिला पार्षद बताती है कि जलभराव की समस्या के समाधान के लिए मैं हर संभव प्रयास कर रही हु किंतु ना तो अधिकारी सहयोग दे रहे हैं और ना ही परिषद, दूसरे वार्ड में रोड नालियों का निर्माण हो रहा है, किंतु हमारी ना तो सडक़ सुधर पा रही है और ना ही नाली का निर्माण हो रहा है। नगर में सबसे बदतर हालत ताप्ती वार्ड में है जो मुझसे देखी नहीं जाती हमारे साथ यह पक्षपात क्यों मेरे समझ में नहीं आ रहा।

एक नजर में ताप्ती वार्ड की जलभराव समस्या: ताप्ती वार्ड पहले खुला मंडी क्षेत्र था जहां घनी आबादी नहीं थी और इस केचमेंट एरिया का पानी छोटी-छोटी नालियों के माध्यम से नालो से होते हुए ताप्ती सरोवर के मुख्य जल मार्ग से जुडक़र सरोवर में समा जाता था। भवनों का निर्माण हुआ और छोटे-छोटे नाले और नालियों को बंद कर दिया गया। नगर पालिका ने जहां जितनी जगह मिली रोड बना दिए नाली बनाना आवश्यक नहीं समझा। कुछ मकानों के सामने नालियां बनी थी उन्होंने इसलिए नालिया बंद कर दी कि दूसरों के यहा नालियां नहीं है तो हमारी क्यों..? अब पानी निकासी को रास्ता न मिलने से पानी सडक़ और खाली प्लाटों में जमा हो रहा है लोग परेशान हैं और समाधान खोजना कठिन हो रहा है।

इनका कहना है -

जहां-जहां से जलभराव की समस्या की शिकायत प्राप्त हो रही है, नगर पालिका जेसीबी के माध्यम से जल निकासी के प्रयास कर रही हैं। नगर पालिका कर्मचारी जल निकासी के लिए तैनात किए गए है।

...महेश शर्मा, उपयंत्री नगर पालिका मुलताई

बारिश से फसलों को जीवनदान, शाहपुर अंचल के खेतों में दिखने लगी हरियाली

इस साल मक्का 22 हजार और धान की 7 हजार हेक्टेयर में हुई बुआई

बैतूल/ भौरा। लंबे इंतजार के बाद सोमवार सुबह से शुरू हुई तेज बारिश ने शाहपुर अंचल के किसानों के लिए संजीवनी का काम किया है। खरीफ सीजन की बुवाई पूरे क्षेत्र में लगभग एक माह पूर्व पूरी हो चुकी थी और फसलें अब ऐसे चरण में थीं जहां उन्हें नियमित नमी की अत्यंत आवश्यकता थी। बीते कुछ दिनों से बारिश न होने और तापमान बढ़ने से खेत सूखने लगे थे, जिससे किसानों की चिंता बढ़ती जा रही थी। ऐसे में यह वर्षा फसलों के लिए जीवनदायिनी साबित हो रही है। शाहपुर अंचल में खरीफ फसलों के तहत लगभग 22 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में मक्का और करीब 7 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में धान की बुवाई की जाती है। बुवाई के दो से तीन सप्ताह बाद पौधों को निरंतर नमी की जरूरत होती है, जिससे उनकी जड़ें मजबूत हो सकें और बढ़वार में तेजी आ सके। इस समय हुई झमाझम बारिश ने खेतों की नमी को बहाल करते हुए फसलों की सेहत में सुधार ला दिया है। खेतों में हरियाली लौट आई है और किसानों के चेहरों पर राहत की मुस्कान देखी जा रही है।

किसानों ने ली राहत की सांस: ग्राम कामठी के किसान अजय मिश्रा ने बताया कि धान की बुवाई के बाद दो-तीन बार सिंचाई की जरूरत होती है। यह बारिश एकदम समय पर आई है, जिससे खेतों में फसल की बढ़वार तेज होगी और खाद भी अच्छे से काम करेगी। वहीं ग्राम कोयलारी के किसान रामनरेश यादव ने कहा कि मक्का की फसल में अभी पौधे बढने की स्थिति में हैं और इस समय पानी की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। यह बारिश हमारे लिए वरदान है। कृषि विस्तार अधिकारी रामकुमार उईके ने बताया कि इस समय की वर्षा फसलों की वृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक होती है। बुवाई के 20 से 30 दिन बाद जब फसल की जड़ें जम रही होती हैं, तब उन्हें नमी मिलना बेहद जरूरी होता है। यह वर्षा न केवल फसलों की बढ़वार में सहायक होगी, बल्कि कीट प्रकोप की संभावना को भी कम करेगी।

जलस्रोतों में बढ़ा जलस्तर, सिंचाई में होगी सहूलियत: तेज बारिश के चलते खेतों के साथ-साथ नालों, तालाबों और नदियों का जलस्तर भी बढ़ा है। इससे आने वाले सप्ताहों में किसानों को वैकल्पिक सिंचाई के लिए जलस्रोत मिल सकेंगे। कई क्षेत्रों में भूजल स्तर में भी सुधार देखा जा रहा है, जो भविष्य की सिंचाई व्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत है। हालांकि लगातार हो रही बारिश के कारण कुछ निचले इलाकों में जलभराव की स्थिति भी बनी है, लेकिन अधिकांश ग्रामीण अंचलों में वर्षा को लेकर संतोष का वातावरण है। किसान खेतों में जाकर फसलों की स्थिति देख रहे हैं और लगातार बारिश के लिए ईश्वर को धन्यवाद दे रहे हैं।

आरडीपीएस के विद्यार्थियों ने लगाए एक हजार पौधे

एक पौधा माँ के नाम अभियान के तहत रिमझिम बारिश में किया पौधरोपण

बैतूल। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महत्वाकांक्षी एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत आरडी पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने खेडला ग्राम के आदिवासी बालक छात्रावास, स्कूल परिसर सहित गांव के सार्वजनिक स्थानों पर लगभग एक हजार पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल के मार्गदर्शन में कक्षा 9वीं से 12वीं कक्षा के आठ सौ से अधिक छात्र-छात्राओं ने सोमवार को रिमझिम बारिश में खेड़ला ग्राम में लगभग एक हजार फलदार, छायादार औषधीय सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किया। छात्र-छात्राओं द्वारा रोपित किए गए पौधे अपनी माताओं और मातृ स्वरूपों को प्रतीकात्मक रूप से समर्पित किए। आरडी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने खेड़ला ग्राम के ग्रामीणों और छात्र-छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण के महत्व से अवगत कराकर लगाए गए पौधों का संरक्षण और संवर्धन करने की अपील की। विद्यार्थियों द्वारा किए गए वृहद पौधरोपण की सराहना करते हुए आरडी पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि पौधरोपण सिर्फ पर्यावरण संरक्षण का कार्य ही नहीं है बल्कि यह सभी की सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारी भी है। डायरेक्टर श्रीमती खण्डेलवाल ने विद्यार्थियों को बताया कि पौधों का रोपण, संवर्धन और संरक्षण मानव जीवन के लिए आवश्यक होने के साथ ही जल संरक्षण, भूमि संरक्षण, जलवायु संतुलन, प्रदूषण नियंत्रण और प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होने कहा कि पौधरोपण सहित इसी तरह की अन्य गतिविधियों में सहभागिता से विद्यार्थियों में सामाजिक सरोकार की भावना विकसित होती है।

संक्षिप्त समाचार

सुभाष स्कूल परिसर में कीचड़ और पानी से परेशानी

बैतूल(निप्र)। शहर के कोठी बाजार में स्थित सुभाष हायर सेकंडरी स्कूल के सामने बारिश का पानी रुकने से कीचड़ हो गया है। यहां पर लोगों और स्कूल के बच्चों को आने जाने में परेशानियां हो रही हैं। यहां पर किसी तरह की बारीक गिट्टी या डस्ट नहीं डलवाई है। इससे काफी ज्यादा परेशानियां दिन पर दिन बढ़ रही हैं। नपा सीएमओ सतीश मटसेनिया ने बताया इस ओर ध्यान देकर व्यवस्था बनाने का प्रयास किया जाएगा।

भामसं ने श्रम योगी से राष्ट्र योगी तक का रास्ता तय किया : साबले

बैतूल(निप्र)। भारतीय मजदूर संघ (भामसं) के स्वर्णिम 70 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रविवार को सरस्वती शिशु मंदिर कालापाठा में एक दिवसीय परिचय वर्ग का आयोजन किया। भामसं के जिला मंत्री पंजाबराव गायकवाड़ ने बताया इस परिचय वर्ग में संगठन की कार्यपद्धति, पंच परिवर्तन, अनिवार्य कार्यक्रम, ध्वज, नारे और गीतों के महत्व पर दो सत्रों में विस्तार से प्रकाश डाला। मधुकर साबले ने बताया भामसं की स्थापना 23 जुलाई 1955 को हुई थी और यह संगठन 23 जुलाई को अपने 70 वर्ष पूर्ण कर रहा है। उन्होंने कहा सात दशकों की इस यात्रा में संगठन ने तमाम कठिनाइयों का सामना करते हुए स्वदेशी विचारधारा को लेकर श्रमिक हितों की लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा आजादी के बाद जब देश संसाधनों की कमी से जूझ रहा था, तब श्रमिकों ने अपनी मेहनत से राष्ट्र निर्माण में जो योगदान दिया, वह अतुलनीय है।

विश्व आदिवासी दिवस पर पुरखों के नाम लगाएंगे एक-एक पौधा

बैतूल(निप्र)। विश्व आदिवासी दिवस को लेकर जिले में तैयारी चरम हैं। रविवार को समस्त आदिवासी समाज संगठन की बैठक पड़ापेन ठाना रैन बसेरा, सदर में आयोजित की। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी योगेश धुर्वे ने की। इस बैठक में निर्णय लिया 9 अगस्त को जिला मुख्यालय पर विश्व आदिवासी दिवस भव्यता और गरिमा के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर समाज के सभी लोग एक-एक पौधा अपने पुरखों के नाम पर लगाएंगे और उन्हें प्रकृति से जोड़कर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।आदिवासी समाज की परंपरा, रीति-रिवाज, संस्कृति और उनके महापुरुषों के योगदान को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए इस दिन संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन भी किया जाएगा। कार्यक्रम में समाज के वक्ता शोषण, अत्याचार और वनाधिकारों को लेकर उद्बोधन देंगे और आदिवासी हितों पर केंद्रित संदेश प्रस्तुत करेंगे। बैठक में प्रदेशभर में आदिवासियों को वनों से बेदखल किए जाने पर गहरी चिंता जताई। कहा यह आदिवासियों की आत्मा और अधिकारों पर सीधा प्रहार है। इस मुद्दे पर विस्तृत मंथन किया जाएगा और कानूनी व सामाजिक स्तर पर संघर्ष की रणनीति बनाई जाएगी। इसके अलावा आदिवासी अंचलों में हो रहे धर्मांतरण, शिक्षा की स्थिति और आर्थिक सशक्तिकरण के उपायों पर भी विस्तार से चर्चा की।

मढ़ई की जिप्सी चालक कु. संगीता एवं गाइड गणेशा को मिला रोजगार, समाज में मिली सम्मानजनक पहचान

नर्मदापुरम (निप्र)। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के अवसर पर 5 जुलाई को एपेक्स बैंक, भोपाल में सहकारी युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नर्मदापुरम जिले की सतपुड़ा वर्कर्स साख एवं कामगार सोसाइटी मढ़ई की महिला सदस्यों – जिप्सी चालक कु. संगीता एवं गाइड गणेशा से विशेष संवाद किया। महिला सदस्यों ने मुख्यमंत्री को बताया कि किस प्रकार सोसाइटी द्वारा उन्हें जिप्सी उपलब्ध कराया गया एवं आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इससे उन्हें न केवल रोजगार प्राप्त हुआ, बल्कि समाज में सम्मानजनक पहचान भी मिली है। उन्होंने कहा कि सहकारिता से जुड़े इस प्रयास ने उनके जीवन में आत्मविश्वास और सम्मान के साथ जीवन जीने की नई राह दिखाई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि सहकारिता आंदोलन के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार एवं स्वावलंबन के अवसर मिल सकें, इसके लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयासरत है।

आईटीआई में रोजगार मेला ''युवा संगम'' 10 जुलाई को लगेगा

हरदा (निप्र)। निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिये शासकीय आईटीआई हरदा में एक दिवसीय रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिस मेले ''युवा संगम'' का आयोजन किया जा रहा है। जिला रोजगार अधिकारी श्री लक्ष्मण सिंह सिलोटे ने बताया कि यह मेला 10 जुलाई को प्रातः 11 बजे से आयोजित होगा। मेले में विभिन्न कम्पनियों द्वारा तकनीकी एवं गैर तकनीकी क्षेत्र में बेरोजगार युवक युवतियों की भर्ती की जायेगी। इस रोजगार मेले में 5 वी, 8वी, 10वी, 12वी, आईटीआई डिप्लोमा, स्नातक व स्नातकोत्तर उत्तीर्ण 18 से 35 वर्ष तक की आयु के युवा भाग ले सकते है। जिला रोजगार अधिकारी श्री सिलोटे ने बताया कि मेले में भाग लेने के इच्छुक युवा अपने सभी मूल दस्तावेज अंकसूची, निवास प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र, आधार कार्ड, राशन कार्ड व परिचय पत्र की फोटोकॉपी, समग्र आईडी तथा 4 पासपोर्ट साइज फोटो के साथ उपस्थित होकर मेले का लाभ प्राप्त कर सकते है।

नागरिकों का विदेश जाने का सपना होगा पूरा : मंत्री श्री सारंग

आधुनिक सुविधाएं सुगम और सुलभ तरीकों से मिलेंगी : राज्यमंत्री श्रीमती गौर

अरेरा हिल्स पर क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय भवन का लोकार्पण

भोपाल। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि नये पासपोर्ट कार्यालय भवन बनने से नागरिकों को सुविधा मिलेगी। वहीं आसान और सरल तरीके से नागरिकों को पासपोर्ट उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नई तकनीकियों के साथ पारदर्शिता पूर्ण सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं यह उसी का उदाहरण है। मंत्री श्री सारंग अरेरा हिल्स स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय के नवीन भवन का लोकार्पण कर कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि कार्यालय भवन में पूरी क्षमता के साथ हर एक टेक्नॉजोजी को आत्मसात किया है। मध्यप्रदेश और देश के हर एक नागरिक को इस कार्यालय की सुविधा प्राप्त होगी। उन्होंने कार्यालय भवन की अवधारणा को सराहा। भवन में हर सुविधा का ध्यान रखते हुए निर्माण किया गया है, जो लोगों को कम समय में अधिक लाभ प्रदान करेंगी। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा है कि कार्यालय भवन में आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं इससे आसानी से समय पर लोगों को लाभ मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि सुगम और सुलभ लाभ देने के लिये कर्मचारियों में विनम्रता भी आवश्यक है।

मुख्य पासपोर्ट अधिकारी डॉ. क.ज. श्रीनिवास ने बताया है कि हर संसदीय क्षेत्र तक पासपोर्ट सेवाएं पहुंचाने के लिये विदेश मंत्रालय प्रतिबद्ध है। भारत में 450 पासपोर्ट सेवा केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। पिछले डेढ़ वर्ष में मध्यप्रदेश में शहडोल, मंदसौर, खंडवा, गुना, खरगोन एवं भिण्ड जिले में पासपोर्ट सुविधा केन्द्र खोले गये है। जल्द ही मंडला में भी सुविधा केन्द्र खोला जायेगा।

शुरूआत में अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन कर और फीता काटकर नये भवन का लोकार्पण किया। कार्यालय भवन में उपलब्ध सुविधाओं का निरीक्षण के बाद आवेदकों को सुविधाओं के दृष्टिगत प्रकाशित कॉमिक बुक 'क्षितिज' का विमोचन भी किया। श्रेष्ठ कार्य करने वालों का प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान भी किया। नये पासपोर्ट कार्यालय भवन में आधुनिक सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया है। यहां शिशु पालक कक्ष, आवेदकों, कर्मचारियों के लिये पुस्तकालय, छोटे बच्चों के लिये स्ट्रालर, दिव्यांगों के लिये व्हीलचेयर, कर्मचारी कल्याण कक्ष, कैफेटेरिया आदि की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है।

राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम के तहत एम्स भोपाल में 2500 कर्मचारियों को सेवा भावना का प्रशिक्षण

भोपाल। एम्स भोपाल में कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम के फेज-2, स्टेज-3 का आयोजन 7 जुलाई 2025 से 4 सितम्बर 2025 तक किया जा रहा है। इस चरण में संस्थान के लगभग 2500 स्टाफ सदस्यों को एक दिवसीय सत्र के माध्यम से नागरिक-प्रथम सोच और सेवा-भाव को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इस चरण का पहला सत्र 7 जुलाई 2025 को डॉ. अश्विन और डॉ. अहमद द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस पहल के अंतर्गत कुल 26 टीमों का गठन किया गया है, जिनमें 52 प्रशिक्षित फेसिलिटेटर्स शामिल हैं, और ये टीमें लगभग 75 प्रशिक्षण सत्रों का संचालन करेंगी। भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम एक परिवर्तनकारी प्रयास है, जिसका उद्देश्य केंद्र सरकार के कर्मचारियों के दृष्टिकोण को जनसेवा की ओर पुनः परिभाषित करना और सरकारी तंत्र में जवाबदेही, संवेदनशीलता एवं सेवा भावना को संस्थागत रूप देना है।

कार्यक्रम की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय कर्मयोगी जन सेवा कार्यक्रम पारंपरिक प्रशिक्षण पद्धति से भिन्न है। इसमें कोई ट्रेनर नहीं होते, बल्कि फेसिलिटेटर होते हैं, जो प्रतिभागियों को कुछ सिखाने के बजाय उन्हें स्वयं के भीतर छिपे सेवा भाव को खोजने और समझने में मार्गदर्शन करते हैं। यह एक ऐसी यात्रा है जो प्रत्येक कर्मी में सेवा-भाव को जागृत करती है और हमारी सेवा प्रणाली को नागरिक-केन्द्रित बनाती है।

प्रदेश के विद्यालयों में गुरू पूर्णिमा पर होगा दो दिवसीय उत्सव

आयुक्त लोक शिक्षण कार्यालय ने जारी किये निर्देश

हरदा (निप्र)। सभी विद्यालयों में 10 जुलाई गुरूवार को गुरू पूर्णिमा के मौके पर 2 दिवसीय उत्सव का आयोजन किया जायेगा। यह आयोजन 9 और 10 जुलाई को होगा। इस संबंध में आयुक्त लोक शिक्षण श्रीमती शिल्पा गुप्ता ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश जारी किये हैं। निर्देश में कहा गया है कि पहले दिन 9 जुलाई को विद्यालय में प्रार्थना सभा के बाद शिक्षकों द्वारा गुरू पूर्णिमा के महत्व और पारंपरिक गुरू-शिष्य संस्कृति के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी जायेगी। विद्यालय में प्राचीन काल में प्रचलित गुरूकुल व्यवस्था एवं उसका भारतीय संस्कृति में प्रभाव विषय पर बच्चों के बीच में निबंध लेखन प्रतियोगिता की जायेगी। विद्यालयों के प्राचार्यों से कहा गया है कि आयोजन के दौरान साधु-संतों, गुरूजनों, सेवानिवृत्त शिक्षकों, विद्यार्थियों और नागरिकों को आमंत्रित किया जाये। इन आयोजन में विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों को भी आमंत्रित किया जा सकता है। पूर्व विद्यार्थी अपने शाला जीवन के अनुभव को विद्यार्थियों के बीच साझा करेंगे। उत्सव के दूसरे दिन 10 जुलाई को गुरू पूर्णिमा के दिन प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में वीणा वादिनी माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन और माल्यार्पण कर गुरू वंदना की जायेगी। विद्यालयों में पदस्थ शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा गुरू की महिमा पर केन्द्रित व्याख्यान होंगे। इसी के साथ इस दिन गुरूजनों एवं शिक्षकों का सम्मान भी किया जायेगा। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा बच्चों में भारतीय मूल्यों संस्कृति आधारित शिक्षा के लिये कई उललेखनीय कदम उठाये गये हैं। उनमें से एक विद्यालयों में गुरू पूर्णिमा का आयोजन किया जाना भी एक है।

समूह के सहयोग से हेमलता ने बदली हाथ की लकीरें

आजीविका मिशन बना सशक्तिकरण की मिसाल

नर्मदापुरम (निप्र)। जिला नर्मदापुरम के सोहागपुर विकासखंड अंतर्गत ग्राम बरुआढाना की हेमलता कुशवाह ने मध्य प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़कर न सिर्फ अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया बल्कि ग्राम की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बन गई हैं। हेमलता कुशवाह जय माता स्व सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। समूह से जुड़ने से पूर्व उनका परिवार आर्थिक रूप से बेहद कमजोर था और मजदूरी पर निर्भर था, जिससे परिवार की शिक्षा एवं अन्य अवसर सीमित थे। वर्ष 2017 में आजीविका मिशन की पहल पर जब ग्राम की महिलाओं को स्व सहायता समूह से जोड़ने का अभियान चलाया गया तब हेमलता ने भी समूह से जुड़ने का निश्चय किया। समूह की बैठकों में भाग लेकर हेमलता ने विभिन्न आजीविका गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने सब्जी उत्पादन और कृषि कार्य शुरू किया। इसके साथ ही उन्होंने ग्राम में सीएससी सेंटर स्थापित कर ग्रामीणों को बैंकिंग, पेंशन और अन्य ऑनलाइन सेवाएं सुलभ कराईं। इससे न केवल गाँव के वृद्धजनों को पेंशन के लिए बाहर जाने की आवश्यकता समाप्त हुई बल्कि उनकी अपनी आमदनी भी बढ़ी। हेमलता ने सीआरपी के रूप में भी कार्य करना प्रारंभ किया जिससे उन्हें मानदेय के रूप में अतिरिक्त आय हो रही है।

इसके साथ ही वे मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना का लाभ भी प्राप्त कर रही हैं। समूह से जुड़ने के बाद हेमलता के जीवन में आर्थिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर सकारात्मक बदलाव आए हैं। आज वे स्वयं सब्जी उत्पादन एवं विक्रय का कार्य कर अपने परिवार को आर्थिक संबल प्रदान कर रही हैं। इसके साथ ही वे अन्य महिलाओं को भी कृषि एवं आजीविका गतिविधियों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं। हेमलता कहती हैं कि स्व सहायता समूह से जुड़ने के बाद उन्हें जीवन में आत्मविश्वास, सम्मान और नई पहचान मिली है। आजीविका मिशन से जुड़कर वे बेहद खुश हैं और उन्होंने मिशन के प्रति आभार व्यक्त किया है। हेमलता कुशवाह का यह सफल प्रयास इस बात का उदाहरण है कि स्व सहायता समूह और आजीविका मिशन के सहयोग से ग्रामीण अंचल की महिलाएं आत्मनिर्भर बनकर समाज में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं।

फसल की सुरक्षा के लिये खेत पर तार-फेंसिंग लगाने का आधा खर्च सरकार वहन करेगी

सीहोर (निप्र)। फसलों को जंगली जानवरों से बचाने के लिए खेतों पर तार-फेंसिंग लगाने का आधा खर्चा राज्य सरकार वहन करेगी। अब राष्ट्रीय बागवानी एकीकृत विकास कार्यक्रम के तहत उद्यानकी फसल उगाने वाले कृषक अपने खेत के चारो ओर 5 तार व खम्बे की फेंसिंग लगवा सकते हैं। उद्यानकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा इच्छुक किसानों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये गए हैं। विभाग द्वारा जिलेवार लक्ष्य निर्धारित किया जा चुका है। आयुक्त उद्यानकी के अनुसार उद्यानकी फसलों में सब्जी, फल, फूल एवं मसालों की फसलों को जंगली जानवरों द्वारा क्षति पहुंचाई जाती है। इससे बचाव के लिये यह योजना लागू की गई है। विभाग द्वारा किसानों को तार-फेंसिंग लगाने में आने वाला खर्च का आधा (50 प्रतिशत) अनुदान प्रदान किया जाएगा।

कलेक्टर के निर्देश पर ग्रामीण क्षेत्रों में कैंप लगाकर तेजी से किया जा रहा है फार्मर रजिस्ट्री का कार्य

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जिले में किसानों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए फार्मर रजिस्ट्री का कार्य तेजी से किया जा रहा है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए है कि कोई भी किसान फार्मर रजिस्ट्री से न छूटे। उन्होंने कहा है कि फार्मर रजिस्ट्री केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह किसानों को योजनाओं से जोड़ने का प्रमुख माध्यम है।

रेशम उत्पादन से बदली किस्मत

नर्मदापुरम (निप्र)। विकासखंड माखननगर के ग्राम गूजरवाड़ा निवासी श्रीमती सुमनबाई/श्री नारायण यादव ने रेशम उत्पादन से अपनी मेहनत और लगन के बल पर अपनी पारिवारिक स्थिति को पूरी तरह बदल दिया है। कभी मेहनत मजदूरी कर परिवार चलाने वाली श्रीमती सुमनबाई अब शहतूती रेशम योजना के माध्यम से लखपति दीदी बन चुकी हैं। श्रीमती सुमनबाई वर्ष 2010-11 से रेशम विभाग की स्वावलंबन योजना से जुड़ी हुई हैं।

योजना से जुड़ने के पूर्व उनकी पारिवारिक स्थिति काफी कमजोर थी और वे अपने छह बच्चों के साथ कच्चे खपरेल वाले मकान में जीवन यापन कर रही थीं। रेशम पालन गतिविधियों से जुड़ने के बाद श्रीमती सुमनबाई ने धीरे-धीरे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता हासिल की। अब उनके पास पक्का मकान है, उन्होंने अपनी तीन बेटियों की शादी कर दी है और दो बेटियां स्नातक की पढ़ाई कर चुकी हैं तथा घर पर रहकर रेशम उत्पादन में सहयोग कर रही हैं। उनके दो बेटे भी दसवीं एवं कॉलेज की पढ़ाई कर रहे हैं। श्रीमती सुमनबाई द्वारा चाकी कृमिपालन एवं उत्पादित ककून विक्रय कर आय अर्जित की जा रही है। उन्होंने वर्ष 2024-25 में ककून उत्पादन से 23,082 रुपये तथा चाकी कृमिपालन से 1,60,460 रुपये अर्जित कर कुल 1,83,542 रुपये की आमदनी प्राप्त की है।

आज वे और उनके जैसी कई महिलाएं रेशम पालन गतिविधियों से जुड़कर घरेलू कार्यों के साथ-साथ तीन लाख रुपये तक की वार्षिक आय अर्जित कर रही हैं। श्रीमती सुमनबाई बताती हैं कि रेशम पालन से जुड़ने के बाद अब उन्हें मजदूरी के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता है। रेशम उत्पादन से होने वाली आय से वे परिवार के सभी सदस्यों का पालन-पोषण अच्छे से कर पा रही हैं और समाज में आत्मनिर्भर महिला के रूप में एक मिसाल बनी हुई हैं।

फसल बीमा कराने हेतु कर रहे प्रेरित, नुक्कड़ नाटक से बता रहे फायदे

हरदा (निप्र)। ''फसल बीमा कराओं सुरक्षा कवच पाओ'' की थीम पर नुक्कड़ नाटक कर किसानों को फसल बीमा कराने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उप संचालक कृषि श्री जे.एल. कास्दे ने बताया कि जिले के किसानों को फसल बीमा से होने वाले फायदे बताए जा रहे हैं तथा किसानों को फसल बीमा की अंतिम तारीख के संबंध में जानकारी देकर बीमा कराने की प्रक्रिया भी बताई जा रही है।

उन्होने बताया कि रविवार को हंडिया, खिरकिया, सिराली में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से किसानों को फसल बीमा कराने के लिए प्रेरित किया गया। इसके अलावा प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर बीमा कंपनी प्रतिनिधि और कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा जाकर प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत खरीफ 2025 का प्रचार प्रसार किया जा रहा है। उन्होने बताया कि 1 जुलाई से 7 जुलाई तक फसल बीमा सप्ताह मनाया जा रहा है। उन्होने किसान भाइयों से अनुरोध किया है कि ऋणी किसान संबंधित बैंक के माध्यम से तथा अऋणी किसान वेब सेन्टर या अपने संबंधित बैंक के माध्यम से 31 जुलाई से पूर्व फसल बीमा करवा सकते हैं। उन्होने बताया कि फसल बीमा का उद्देश्य प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुकसान की भरपाई करना है। फसल बीमा के संबंध में अधिक जानकारी भारत सरकार के कृषि रक्षक पोर्टल, हेल्पलाइन नंबर 14447 अथवा बीमा कंपनी प्रतिनिधि अथवा कृषि विभाग से सम्पर्क कर प्राप्त की जा सकती है।

बोलेः जब से पार्टी में हूं, परदे के पीछे काम करता रहा

कार्यकर्ताओं और प्रदेश नेतृत्व के बीच सामंजस्य बैठाकर काम करना मेरी जिम्मेदारी है: हेमंत खंडेलवाल

बैतूल (निप्र)। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद पहली बार गृह नगर बैतूल पहुंचे विधायक हेमंत खंडेलवाल का जोरदार स्वागत हुआ। चार घंटे तक उनका जुलूस शहरभर में घूमते हुए भाजपा जिला कार्यालय पहुंचा। पार्टी में कद बढ़ने पर उनके विरोधी रहे कई नेताओं ने भी उनके साथ मंच साझा किया और जुलूस में शामिल हुए। कार्यकर्ता सम्मेलन में खंडेलवाल ने कहा कि केंद्रीय नेतृत्व ने मुझ जैसे छोटे कार्यकर्ता को प्रदेश का अध्यक्ष बनाया। कुछ दल परिवार से चलते हैं, कुछ दल समाज विशेष के लिए होते हैं, लेकिन भाजपा कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। कार्यकर्ताओं और प्रदेश नेतृत्व के बीच सामंजस्य बैठाकर काम करना मेरी जिम्मेदारी है। खंडेलवाल ने कहा कि मैं जबसे पार्टी में हूं, तबसे मेरा चेहरा कभी आगे नहीं किया। हमेशा पीछे रहकर काम करता रहा। लोकसभा चुनाव में मुझे पार्टी ने संयोजक बनाया, तब भाजपा प्रदेश में 29 की 29 सीटें जीती। यूपी की जिम्मेदारी से लेकर बैंगलोर मिशन में भी पीछे रहकर कार्य किया।

जेसीबी से हुई पुष्प वर्षा

खंडेलवाल दोपहर में बैतूल पहुंचे। सोनाघाटी से लेकर पूरे शहर में हर चौक चौराहे पर उनका स्वागत किया गया। जेसीबी से पुष्प वर्षा की गई।

प्राकृतिक खेती कर कमा रहे हैं रासायनिक खेती के बराबर मुनाफा

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम जिले के विकासखंड माखननगर के ग्राम बुधवाड़ा निवासी प्रगतिशील कृषक श्री नारायण मीना रासायनिक खेती को छोड़कर प्राकृतिक खेती अपनाकर खेती के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं। श्री मीना ने बताया कि प्राकृतिक खेती से उन्हें रासायनिक खेती के समान ही मुनाफा हो रहा है और लागत में भी कमी आ रही है। उन्होंने वर्ष 2021 से आत्मा परियोजना एवं कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर से समय-समय पर प्रशिक्षण, कृषि प्रदर्शनी एवं कृषि विज्ञान मेले आदि में सहभागिता कर प्राकृतिक खेती का तरीका सीखा और उसे अपनी जमीन पर सफलतापूर्वक लागू किया। श्री मीना ने मात्र 1 एकड़ भूमि से प्राकृतिक खेती की शुरुआत की थी और आज वे 3 एकड़ भूमि में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। खरीफ मौसम में श्री मीना ने 3 एकड़ भूमि में पी.बी-1 धान की खेती की, जिसकी कुल लागत 64,500 रुपये आई। उपज बेचने पर 1,98,000 रुपये की आय हुई और लागत घटाने के बाद उन्हें 1,33,500 रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। रबी मौसम में उन्होंने 1 एकड़ में डीबीडब्ल्यू-303 किस्म का गेहूं बोया, जिसमें 10,000 रुपये लागत आई। उपज से 35,000 रुपये प्राप्त हुए और शुद्ध मुनाफा 25,000 रुपये रहा। इसके अलावा रबी मौसम में ही 2 एकड़ में आरवीजी-202 किस्म के चने की खेती की गई, जिसमें 23,600 रुपये की लागत आई। चना बेचने पर 1,26,000 रुपये प्राप्त हुए और 1,02,400 रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया गया। ग्रीष्मकालीन मौसम में 3 एकड़ भूमि में पीडीएम-139 किस्म की मूंग की खेती की गई। इस पर 35,600 रुपये की लागत आई और उपज बेचने पर 1,35,000 रुपये प्राप्त हुए जिससे 99,400 रुपये का शुद्ध लाभ मिला। इस प्रकार श्री मीना को पूरे वर्ष भर में कुल 3,60,300 रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। श्री मीना ने बताया कि वे पोषक प्रबंधन व्यवस्था के तहत जीवामृत, गौकृपामृत, धनजीवामृत का स्वयं निर्माण कर प्रयोग करते हैं। इसके अलावा प्रोम, एजोटोबैक्टर व पी.एस.बी. कल्चर का भी उपयोग किया जाता है। फसल सुरक्षा के लिए दशपर्णी अर्क का निर्माण कर उसका छिड़काव करते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती से न केवल लागत में कमी आती है बल्कि फसलों के बाजार भाव भी अच्छे मिलते हैं। श्री मीना ने बताया कि वे जैविक कृषि के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और मानव स्वास्थ्य के सुधार में योगदान दे रहे हैं। आत्मा परियोजना के मार्गदर्शन में वे अपनी खेती को लगातार उन्नत बना रहे हैं और अन्य किसानों को भी प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

कलियासोत डैम में युवक डूबा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कलियासोत डैम में मंगलवार को एक युवक डूब गया। करोंद निवासी विशाल नारायण नायडू (32) दोस्तों के साथ नहाने गया था। हादसे का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें विशाल तैरता दिखाई दे रहा है। कुछ देर बाद उसकी सांस फूलती है तो वह दोस्त का सहारा लेने की कोशिश करता है, लेकिन अगले ही पल डूब जाता है। विशाल नारायण नायडू करौंद इलाके में निजी कंपनी में वर्क फ्रॉम होम जॉब कर रहा था। हादसे के वक्त वह अपने तीन दोस्तों के साथ डैम पर पहुंचा था। बताया जा रहा है कि तीनों दोस्तों में सिर्फ विशाल को ही तैरना आता था।

भारतीय हज समिति ने हज 2026 के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू की

ऑनलाइन आवेदन 31 जुलाई 2025 तक किए जा सकेंगे

भोपाल। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय हज समिति ने मुस्लिम समुदाय के लिए बेहद महत्वपूर्ण पवित्र तीर्थयात्रा हज 2026 के लिए आधिकारिक तौर पर आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है।

इच्छुक तीर्थयात्री अपने आवेदन आधिकारिक हज पोर्टल या 'हज सुविधा' मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से जमा कर सकते हैं। यह आईओएस और एंड्रॉयड दोनों उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध है। ऑनलाइन आवेदन 7 जुलाई 2025 से 31 जुलाई 2025 (रात 11:59 बजे) तक किए जा सकते हैं।

आवेदकों को अपने फॉर्म जमा करने से पहले दिशा-निर्देश और वचन-पत्र अच्छी तरह से पढ़ने होंगे। आवेदन की अंतिम तिथि को या उससे पहले जारी किया गया मशीन से पढ़ने योग्य भारतीय अंतर्राष्ट्रीय पासपोर्ट होना अनिवार्य है, और इसे कम से कम 31 दिसंबर 2026 तक वैध होना चाहिए।

नर्मदा खतरे के निशान से ऊपर बरगी के 17 गेट खोले

रायसेन में कॉलोनी में बहने लगा बच्चा, लोगों ने बचाया, नर्मदापुरम में स्कूलों की

बैतूल में सतपुड़ा डैम के 7 गेट खोले गए

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में लगातार तेज बारिश की वजह से नर्मदा नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। बरगी के 17 गेट खोल दिए गए हैं। मंडला, डिंडौरी, श्योपुर, शहडोल, उमरिया समेत कई जिले बाढ़ की चपेट में हैं। सोमवार को 30 से ज्यादा जिलों में बारिश का दौर चला। वहीं, मंगलवार को 7 जिलों में बाढ़ का खतरा है। मौसम विभाग ने अति भारी बारिश होने का अलर्ट जारी किया है। टीकमगढ़ जिले में धसान नदी पर बने बान सुजारा बांध के 5 गेट और खोल दिए गए हैं। सुबह 7 गेट खोले थे। दमोह में सतधरू और साजली बांध के तीन-तीन गेट खोले गए हैं। नरसिंहपुर के कौड़ियां गांव में बाढ़ आ गई है। रहवासियों का कहना है कि घर में बैठने तक की जगह नहीं है। बैतूल जिले के सारणी में सतपुड़ा डैम के 7 गेट 5-5 फीट तक खोल दिए गए हैं। नर्मदापुरम में जिला शिक्षा अधिकारी ने बारिश को देखते हुए मंगलवार को स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया है। मंडला में नर्मदा नदी 438.10 मीटर पर बह रही है। ये खतरे के निशान 437.8 से ऊपर है। सोमवार रात मंडला में उफनती नदी पार करने के दौरान बाइक सवार बह गए। दो युवक बाहर निकल आए, जबकि एक लापता है।

नर्मदापुरम में आज भी स्कूलों में छुट्टी रहेगी: नर्मदापुरम में जिला प्रशासन ने 9 जुलाई का भी स्कूलों का अवकाश किया घोषित किया है।

रायसेन : देवरी में कार, स्कूटी और ठेला बहे

रायसेन जिले के देवरी में 20 इंच बारिश हो चुकी है। इस दौरान सड़क पर खड़ी कार एक एक्टिवा और ठेला भी तेज बहाव में बह गए। इसका सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है।

नरसिंहपुर : युवक सींगरी नदी में बहा

नरसिंहपुर के किसानी वार्ड का रहने वाला जाकिर खान नाम का युवक सींगरी नदी में बह गया है। गणेश मंदिर से कचहरी मार्ग को जोड़ने वाले पुल को पार करने के दौरान ये हादसा हुआ। युवक की तलाश की जा रही है।

कोली पुल के ऊपर नर्मदा का पानी: नरसिंहपुर के साईखेड़ा में कोली पुल के ऊपर नर्मदा का पानी आ गया है। नरसिंहपुर जिले का रायसेन जिले से संपर्क टूट गया है। आवागमन पूरी तरह बंद है। एहतियातन पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है।

बेगमगंज में दो मंजिला मकान की छत गिरी: रायसेन जिले के बेगमगंज भारी बारिश के चलते दो मंजिला मकान की छत भरभराकर गिर गई। घटना सोमवार देर रात करीब 1:30 बजे की है। जिस समय हादसा हुआ उस समय मकान में कोई भी मौजूद नहीं था। मकान मालिक बाबू कुरैशी अपने परिवार के साथ पास में ही बने दूसरे मकान में थे।

इटारसी में बारिश में एसडीएम ने किया निरीक्षण: नर्मदापुरम के इटारसी में एसडीएम टी प्रतिक राव ने वार्ड 21 नदी मोहल्ला में प्रशासनिक अमले के साथ निरीक्षण किया। रहवासियों ने एसडीएम को बारिश से हो रही समस्याओं के बारे में बताया। जर्जर भवन के बारे में भी जानकारी दी।

बान सुजारा डैम के सभी 12 गेट खोले गए: छतरपुर और टीकमगढ़ के बान सुजारा बांध के 5 और गेट खोल दिए गए हैं। सुबह 7 गेट खोले गए हैं। अब कुल 12 गेट पानी छोड़ा जा रहा है। लगातार हो रही बारिश से पुल के दोनों छोर पर पुलिस और प्रशासन के अधिकारी तैनात हैं। आसपास के गांवों में प्रशासन ने बाढ़ का अलर्ट जारी किया है।

छिंदवाड़ा में पुल पर से बह रहा नदी का पानी: छिंदवाड़ा के हर्रई में 48 घंटे से लगातार बारिश जारी है। नदी का पानी पुल के ऊपर से बह रहा है। करीब 10 गांवों का संपर्क टूट गया है। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस प्रशासन ने बैरिकेड लगा दिए हैं।

जलस्तर बढ़ा तो डूब जाएगा नरसिंहपुर का बरमान घाट: नरसिंहपुर में नर्मदा का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। यहां बरमान का पुराना पुल से लगकर पानी बह रहा है। यदि जलस्तर इसी तरह बढ़ता गया तो लगभग 7 फीट ऊंचाई के बाद पुल डूब जाएगा। रेतघाट का पुल डूब चुका है।

भोपाल में 11 इंच बारिश, बड़ा तालाब में पानी बढ़ा : पूरा भरने में सवा 7 फीट पानी की जरूरत

राजधानी भोपाल में तेज बारिश का दौर जारी है। सोमवार रात 1 इंच पानी गिरा। वहीं, मंगलवार को भी रुक-रुककर कभी तेज तो कभी हल्की बारिश हो रही है। बारिश की वजह से जलस्रोतों में भी पानी बढ़ गया है। बड़ा तालाब, कोलार, कलियासोत और केरवा में पानी की आवक जारी है। भोपाल में अब तक औसत 11 इंच बारिश हो चुकी है। मंगलवार को भारी बारिश का अलर्ट है। ऐसे में यह आंकड़ा और भी बढ़ जाएगा। वहीं, मौसम विभाग ने सीहोर में अति भारी बारिश की चेतावनी दी है। सीहोर में तेज बारिश होने से कोलांस नदी उफान पर आएगी, जिससे बड़ा तालाब में पानी और बढ़ेगा।

- **कई इलाकों में जलभराव**
तेज बारिश की वजह से कई इलाकों में जलभराव जैसे हालात भी बन रहे हैं। इनमें हमीदिया रोड, नादरा बस स्टैंड, अशोका गार्डन, शिवनगर, करोंद आदि शामिल हैं।
- **अब तक 3 इंच ज्यादा हुई बारिश**
मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल में अब तक 3 इंच पानी ज्यादा गिर चुका है। अब तक की औसत बारिश 8 इंच है, जबकि 11 इंच पानी गिरा है।

स्कूल बस ने नर्सरी के छात्र को कुचला

शुजालपुर में बच्चे के उतरते समय ड्राइवर ने गाड़ी आगे बढ़ाई, पेट के ऊपर से गुजरा पहिया

शुजालपुर (नप्र)। शुजालपुर के पचोर रोड स्थित ग्राम चितौड़ा में स्कूल बस ने नर्सरी के छात्र को कुचल दिया। हादसा उस वक्त हुआ जब छात्र बस से नीचे उतर रहा था। अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। पेशे से मजदूर संजय जाटव ने 4 दिन पहले अपने जुड़वा बेटों कुणाल और सम्राट (5) का सरस्वती शिशु मंदिर शुजालपुर में नर्सरी में एडमिशन कराया था। सोमवार को स्कूल की छुट्टी के बाद दोनों बच्चे स्कूल बस से गांव पहुंचे।बस से पहले सम्राट उतरा और फिर कुणाल उतर रहा था। कुणाल के पूरी तरह उतरने से पहले ही ड्राइवर ने बस आगे बढ़ा दी। कुणाल बस के पहिए की चपेट में आ गया। बस का पहिया उसके पेट से गुजर गया।घटना के बाद मौके पर मौजूद ग्रामीण बच्चे को फौरन एक निजी अस्पताल ले गए, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सिविल अस्पताल शुजालपुर मंडी भेजा गया है। परिजन ने बस और ड्राइवर की जानकारी पुलिस को दे दी है। पुलिस ड्राइवर का पता लगा रही है। बस स्कूल की ही बताई जा रही है।

लेडी टीआई ने थाने में फिल्मी गाने पर बनाई रील

रीवा में डीआईजी का पुलिसकर्मियों के लिए आदेश, ऐसा किया तो कार्रवाई होगी

रीवा (नप्र)। रीवा रेंज के डीआईजी राजेश सिंह ने पुलिसकर्मियों के रील बनाने पर सख्ती दिखाई है। उन्होंने संभाग के 6 जिलों रीवा, सीधी, सतना, मैहर, सिंगरौली और मऊगंज में पदस्थ पुलिसकर्मियों को ऐसा नहीं करने की हिदायत दी है। दरअसल, हाल ही में कई पुलिसकर्मियों ने रील बनाकर उन्हें सोशल मीडिया पर अपलोड किया। जिस पर लोगों ने कई तरह के कमेंट्स किए है। जिसकी वजह से पुलिस विभाग की किरकिरी हुई है। जिसके बाद सोमवार को डीआईजी ने अपने अधीनस्थ सभी पुलिसकर्मियों को रील नहीं बनाने को कहा है। साथ ही विभागीय कार्यों के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसी पोस्ट सोशल मीडिया पर नहीं प्रेषित करने को कहा है, जिससे पुलिस विभाग की गरिमा को क्षति पहुंचे।

आदेश में लिखा- छवि पर पड़ता है प्रतिकूल प्रभाव

डीआईजी ने अपने आदेश में लिखा कि प्रायः देखा जा रहा है कि बहुत से पुलिसकर्मी वर्दी में अथवा सिविल में अपनी रील बनाकर सोशल मीडिया में वायरल/अपलोड करते हैं। पुलिस जैसे अनुशासित विभाग में रहकर किसी भी पुलिसकर्मी द्वारा ऐसा किया जाना अनुशासन के सर्वथा विपरीत होकर उसकी पद और गरिमा के भी प्रतिकूल है। इससे आज जनता के मध्य पुलिस की छवि पर भी अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यदि भविष्य में इस किस्म की कोई भी पोस्ट सोशल मीडिया पर प्रकाशित होती है तो संबंधित के खिलाफ कठोर विभागीय अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाए अथवा कार्यवाही हेतु प्रतिवेदन इस कार्यालय को भेजें। जिसके लिए वह अधिकारी या कर्मचारी स्वयं जिम्मेदार होगा।

तीन मामले जब पुलिसकर्मियों की रील सामने आई

शनिवार को सगरा थाना प्रभारी अंकिता मिश्रा की अभिनेत्री माधुरी दीक्षित के रोमांटिक गाने पर थाने के अंदर बनाई रील सामने आई थी। यह सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई। लोगों ने थाना प्रभारी को सोशल मीडिया पर ट्रोल करना शुरू कर दिया। कुछ ने तो यहां तक लिखा कि आपको पुलिस विभाग नहीं, बल्कि मुंबई में होना चाहिए। 16 अप्रैल 2025 को सिटी कोतवाली थाने में पदस्थ प्रधान आरक्षक संध्या वर्मा के वीडियो जमकर वायरल हुए थे। जहां प्रधान आरक्षक ने ड्यूटी टाइम में कई फिल्मी और रोमांटिक गानों पर वर्दी में रील बनाई और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर पोस्ट की थी।जिसके बाद सभी वीडियो बैक टू बैक जमकर वायरल हो गए और पुलिस विभाग की जमकर किरकरी हो गई। इस पर इन्हें एसपी विवेक सिंह ने नोटिस जारी किया था।ड्यूटी के समय प्रधान आरक्षक संध्या वर्मा के हिंदी गानों पर वीडियो सामने आए थे। 25 मई 2024 को लोकसभा चुनाव के दौरान अखिलेश यादव के पक्ष में प्रचार गीत गाना रीवा जिले के एक पुलिस आरक्षक को महंगा पड़ गया था। जिले के सोहागी थाना अंतर्गत त्योंथर चौकी में पदस्थ आरक्षक मुन्ना यादव ने आदर्श आचार संहिता उल्लंघन किया था। आरक्षक ने यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री व समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव के पक्ष में प्रचार गीत गाकर सोशल मीडिया में अपलोड किया गया था। जिसकी रील जमकर वायरल हुई थी जिसमें उसने कहा था कि 400 का नारा धरा रह जाएगा। देखते ही देखते यह वीडियो और रील सोशल मीडिया में वायरल हो था। जिसके बाद मामले पर संज्ञान लेते हुए रीवा एसपी विवेक सिंह ने आरक्षक को लाइन हाजिर कर दिया था।

रेगुलेटर से लीक हुई थी गैस, मिलेगा 10 लाख का मुआवजा

आग से झुलसे युवक की हुई थी मौत, बीमा कंपनी को 2 माह में भुगतान करने का आदेश

भोपाल (नप्र)। करीब दस साल पहले भोपाल के शाहजहांनाबाद इलाके के संजय नगर में गैस सिलेंडर से हुई दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत और उसके परिवार के कई सदस्यों के झुलसने के मामले में जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग ने फैसला सुनाया है। आयोग ने इस मामले में बीमा कंपनी यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस लिमिटेड को मृतक की संतानों को 10 लाख रुपए का मुआवजा अदा करने और झुलसे अन्य परिवादियों को 10-10 हजार रुपए क्षतिपूर्ति के रूप में भुगतान करने के निर्देश दिए हैं। यह फैसला उपभोक्ता अधिकारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण उदाहरण माना जा रहा है।

क्या था मामला: 15 अप्रैल 2015 की शाम लगभग 7 बजे, संजय नगर स्थित आवास में गैस सिलेंडर के रेगुलेटर में लीक के चलते अचानक आग लग गई थी। घटना के वक्त दुर्गेश गुप्ता (35) अपने परिवार के साथ वहीं रह रहे थे। आग लगने से दुर्गेश गंभीर रूप से झुलस गए और इलाज के दौरान 25 अप्रैल को हमीदिया अस्पताल में उनकी मौत हो गई थी। इस हादसे में उनके परिवार के अन्य सदस्य किरण देवी, सुमन, कृष्णा, हर्षिता, दीपक और हर्ष भी घायल हुए थे।

एजेंसी और ऑयल कंपनी ने टाल-मटोल की, बीमा क्लेम नहीं मिला: हादसे के तुरंत बाद परिवादी परिवार ने न केवल पुलिस को, बल्कि गैस एजेंसी और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन को भी इसकी सूचना दी।

अशोक नगर में न्याय सत्याग्रह में कांग्रेस विधायक का विवादित बयान

- **जो मर्द थे वे जंग में आए, जो .....थे, वे संघ में गए**
- **पटवारी के साथ नेताओं ने दी गिरफ्तारी**

अशोकनगर (नप्र)। मध्यप्रदेश कांग्रेस ने मंगलवार को अशोकनगर में न्याय सत्याग्रह किया। प्रदेशभर से नेता और कार्यकर्ता यहां पार्टी अध्यक्ष जीतू पटवारी पर दर्ज एफआईआर के विरोध में गिरफ्तारी देने पहुंचे। इसी बीच ग्वालियर ग्रामीण कांग्रेस विधायक साहब सिंह गुर्जर ने मंच से विवादास्पद बयान दिया। गुर्जर ने कहा- जो मर्द थे वे जंग में आए, जो ..... थे, वे संघ में गए। समझ गए न, इशारा ही काफी है। कार्यक्रम में आ रहे विधायकों और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के काफिले को पुलिस ने जगह-जगह चेकिंग के लिए रोका। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने कहा कि हमें रोकने के लिए 8 जिलों की पुलिस बुलाई गई। पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि कार्यकर्ता का जहां पसीना गिरेगा, वहां मेरा, कांग्रेस के नेताओं के खून की अंतिम बूंद भरी गिरेगी। कार्यक्रम के अंत में एसडीओपी विवेक शर्मा ने अशोक नगर में मंच से जीतू पटवारी सहित न्याय सत्याग्रह में उपस्थित सभी लोगों को गिरफ्तार करने की घोषणा की। तत्काल ही अशोकनगर एसडीएम बृज बिहारी लाल श्रीवास्तव ने सभी को रिहा करने की घोषणा कर दी।

जीतू पटवारी ट्रैक्टर चला कर पहुंचे: इससे पहले पटवारी ट्रैक्टर से पुरानी कृषि उपज मंडी स्थित सभास्थल तक पहुंचे। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार 100 गाड़ियों के काफिले के साथ आए। तराना विधायक महेश परमार की गाड़ी पुलिस ने चेकिंग के लिए रोकी तो वे भड़क गए। उन्होंने कहा- विधायकों की गाड़ी की भी चेकिंग कर रहे हो। मुझे गोली मार दो और बीजेपी का बिल्ला लगा लो। जौरा विधायक पंकज उपाध्याय और पोहरी विधायक कैलाश कुशवाह को भी पुलिस ने रोक लिया। इस पर कुशवाह एसआई से बोले- मैडम हमारी भी सरकार बनेगी।

सिंघार बोले- हम क्या बम, हथियार, मिसाइल लेकर जा रहे हैं: इससे पहले सिंघार के काफिले की गाड़ियों की गुना में पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास चेकिंग की गई। पुलिस ने गाड़ियों के नंबर और इनमें सवार लोगों के नाम दर्ज किए। डिग्गी खोलकर तलाशी ली। इस पर नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार पुलिस से बोले, हम क्या बम, हथियार, मिसाइल लेकर जा रहे हैं? क्यों परेशान कर रहे हो? इस पर पुलिस ने कहा- ये सब तो आप की ही सुरक्षा के लिए है।

जीतू पटवारी ने कहा- जिंदा हैं तो जिंदा नजर आना जरूरी है: पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा- कार्यकर्ता का जहां पसीना गिरेगा, वहां मेरा, कांग्रेस के नेताओं के खून की अंतिम बूंद भरी गिरेगी। एक शेर था, कुछ दिन पहले जब सरकार गिरी थी, तब एक शेर आया था। वसूलों पर आंच आए तो टकराना जरूरी है, जिंदा हैं तो जिंदा रहना भी जरूरी है।

विकास प्रक्रियाओं में बढ़ा नवाचार

हरदा का हृदय अभियान बना आदर्श उदाहरण, राज्य नीति आयोग ने की सराहना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर विकास प्रक्रियाओं में नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। नवाचारों की श्रंखला में हरदा जिले में स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा का संयुक्त हृदय अभियान आदर्श उदाहरण साबित हुआ। राज्य नीति आयोग ने भी इस अभियान की सराहना की है। जिले के स्वास्थ्य एवं शिक्षा के सूचकांकों में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। हरदा जिले में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण तथा शैक्षिक सेवाओं को हृदय अभियान के अंतर्गत माताओं, बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार लाया गया। सभी हितग्राही माताएँ और 18 वर्ष तक के बच्चों को शासकीय योजनाओं का लाभ दिलाया गया। मातृ मृत्यु, शिशु मृत्यु के आंकड़ों में कमी लाने और कुपोषण को कम करने के लिये एक साथ विशेष गतिविधियां चलाई गई। इसके लिए घर-घर जाकर सर्वेक्षण कर जानकारी प्रदान करना, गर्भवती माताओं को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना और बालक-बालिकाओं को पुनः शिक्षा से जोड़ने जैसी महत्वपूर्ण गतिविधियां चलाई गई। ऐसे गांवों का चयन किया गया जिनके स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा संबंधी सूचकांक पिछले कुछ वर्षों में न्यूनतम रहे।

कैसे हुई हृदय अभियान की शुरुआत

जिले में नवाचार के रूप में कुपोषण मुक्त करने और जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा तथा स्वास्थ्य की सुविधाओं की पहुंच बच्चों और महिलाओं तक बढ़ाने के उद्देश्य से हृदय अभियान चलाया गया। दूर दराज के 50 गांवों को चिन्हित किया गया, जिनमें गर्भवती माताओं और बच्चों की समस्या दूसरे गांवों की अपेक्षा ज्यादा थी।

रतलाम में भगवा झंडा जलाने पर भोपाल में प्रदर्शन

हिंदू संगठन ने कहा- दंगा फैलाने वालों को मिले सख्त सजा, रासुका लगाने की मांग

भोपाल (नप्र)। रतलाम में मोहर्रम के जुलूस के दौरान हुई विवादास्पद घटना को लेकर संस्कृति बचाओ मंच ने भोपाल में प्रदर्शन किया। प्लेटिनम प्लाजा के पास मंच से जुड़े पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने एकत्र होकर नारेबाजी की। कार्यकर्ताओं ने प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अपील की कि जो भी तत्व मध्यप्रदेश की फिजा बिगाड़ने की साजिश कर रहे हैं, उनके खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत कार्रवाई की जाए।

प्रदर्शनकारियों का कहना था कि मोहर्रम के नाम पर निकलने वाले जुलूसों में हिंदू भावनाओं को आहत करने की कोशिश की जा रही है। आरोप लगाया गया कि कुछ लोगों द्वारा हिंदू राष्ट्र के झंडे का अपमान किया गया, झंडा जलाने का प्रयास हुआ । यह सब एक सुनियोजित साजिश का हिस्सा है, ताकि प्रदेश में सांप्रदायिक तनाव फैलाया जा सके। मंच के पदाधिकारियों ने कहा कि ऐसे असामाजिक तत्वों के आपराधिक रिकॉर्ड खंगाले जाएं और उन्हें जेल भेजा जाए। अगर समय रहते सख्त कदम नहीं उठाए गए तो यह आग पूरे प्रदेश में फैल सकती है।

मुख्यमंत्री से की यह मांगें

दंगा फैलाने वाले उपद्रवियों पर रासुका लगे।
धार्मिक भावनाएं भड़काने वालों को कड़ी सजा मिले।
उपद्रवियों का पता लगाकर स्थायी कार्रवाई की जाए।
मध्यप्रदेश की फिजा बिगाड़ने वालों को बख्शा न जाए।

संस्कृति बचाओ मंच ने प्लेटिनम प्लाजा के पास प्रदर्शन किया।

इन पदाधिकारियों ने किया नेतृत्व

प्रदर्शन की अगुवाई मंच के वरिष्ठ सदस्य चंद्रशेखर तिवारी ने की। उनके साथ मंच के मीडिया प्रभारी छोटेलाल गिरी, जिला उपाध्यक्ष रामस्वरूप राजपूत, गजेंद्र यादव, प्रवीण पदनाम, रघुवीर पटेल और टिंकू परमेश्वर भी मौजूद रहे। सभी ने एक स्वर में मुख्यमंत्री से अपील की कि प्रदेश की शांति और सौहार्द को बचाने के लिए कठोर कदम उठाए जाएं। संस्कृति बचाओ मंच ने यह भी स्पष्ट किया कि यह प्रदर्शन किसी विशेष समुदाय के खिलाफ नहीं, बल्कि प्रदेश की एकता, अखंडता और कानून व्यवस्था की रक्षा के लिए है। मंच ने चेतावनी दी कि यदि दोषियों पर कार्रवाई नहीं होती तो आगे और बड़ा आंदोलन किया जाएगा।